॥ओ३म्॥

पाक्षिक

परोपकारी

• वर्ष ५९ • अंक ११ • मूल्य ₹१५ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र • जून (प्रथम) २०१७

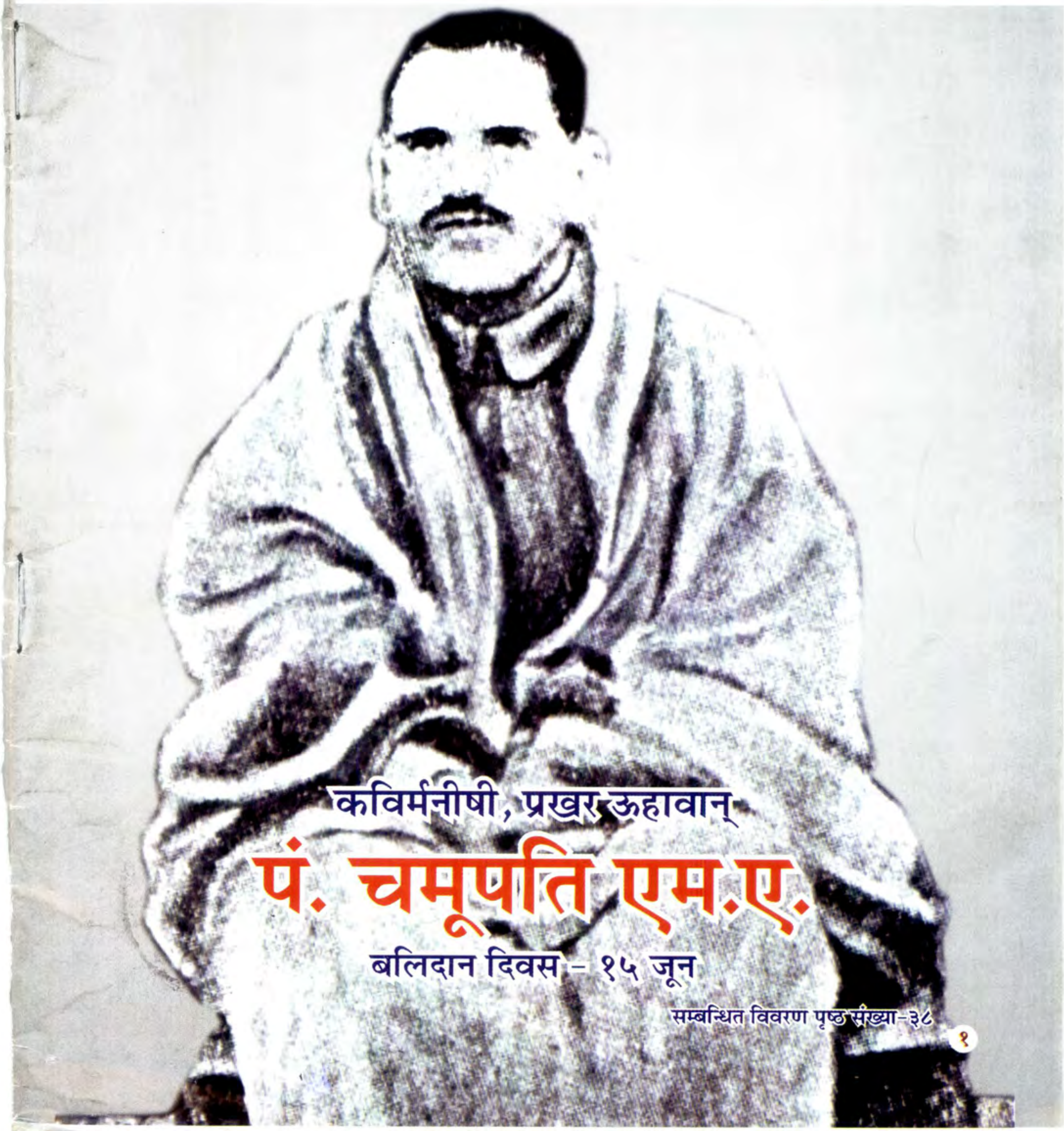

कविर्मनीषी, प्रखर ऊहावान्

पं. चमूपति एम.ए.

बलिदान दिवस - १५ जून

सम्बन्धित विवरण पृष्ठ संख्या-३८

आर्यवीर दल के अधिकारियों तथा शिक्षकों द्वारा
अजमेर के कलेक्टर श्री गौरव गोयल एवं
श्री पुनीत चावला (डी.आर.एम.अजमेर) का सम्मान

आर्यवीर दल, अजमेर शिविर की झलकियाँ (१४-२१ मई २०१७)

आर्यवीरों द्वारा मानव-पुल का निर्माण

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५९ अंक : ११

दयानन्दाब्द: १९३

विक्रम संवत्: ज्येष्ठ शुक्ल २०७४

कलि संवत्: ५११८

सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११८

सम्पादक

डॉ. दिनेशचन्द्र शर्मा

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर- ३०५००१

दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।

दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु.,

आजीवन-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

एक प्रति - १५/- रु.

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस.डॉलर

द्विवार्षिक-९५ पा./१५२ डॉ.,

त्रिवार्षिक-१४० पा./२२५ डॉ.,

आजीवन-(=१५वर्ष)-५००पा./८०० डॉ.

एक प्रति - ३ पाउण्ड

एक प्रति - ४ डॉलर

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०

ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९/५९

परोपकारी

जून प्रथम २०१७

अनुक्रम

०१. आर्य समाज और इतिहास-दृष्टि	सम्पादकीय	०४
०२. संध्योपासना क्यों-३	डॉ. धर्मवीर	०७
०३. कुछ तड़प-कुछ झड़प	प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु	१२
०४. किष्किन्धा का वानर-राजवंश	आ. उदयवीर शास्त्री	१६
०५. आर्य समाज सृष्टिक्रम....	उम्मेदसिंह विशारद	२०
०६. सृष्टि विवेचनम्	शिवदेव आर्य	२३
०७. पुस्तक - समीक्षा	सोमेश पाठक	२५
०८. कर्ण के जन्म की पड़ताल	जगदीश प्रसाद हरित	२९
०९. शंङ्का - समाधान - ३	डॉ. वेदपाल	३४
१०. संस्था-समाचार		३६
११. मुझसे मेरे हमदम न पूछ मैं क्या....	सोमेश 'पाठक'	३८
१२. आर्यजगत् के समाचार		४२

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

आर्य समाज और इतिहास-दृष्टि

प्राचीन भारत में इतिहास लेखन की समृद्ध परम्परा थी, जिसके ज्वलन्त उदाहरण 'महाभारत' और 'रामायण' जैसे ग्रन्थ हैं। दुर्भाग्य से इन्हें इतिहास-ग्रन्थ न मानकर धर्मग्रन्थ मान लिया गया है। पुराकाल से ही इतिहास की अनेक विधाएं एतिह्यविदों द्वारा प्रचलन में थीं, जैसा कि उनके अनेक पर्यायों से स्पष्ट होता है- ऐतिह्य पुरावृत्त, आख्यान, उपाख्यान, गाथा, नाराशंसी, पुराण इत्यादि। 'ऐतिह्य' तो आठ प्रमाणों में भी परिगणित ही है। दुर्भाग्य से पौराणिक काल में इस विधा के साथ पर्याप्त छेड़-छाड़ हुई जिससे यह संदेह के घेरे में आ गई और पाश्चात्य इतिहासकारों द्वारा जाने-अनजाने भारतीय इतिहास को अविश्वसनीय माना जाने लगा।

प्रसिद्ध कहावत है कि किसी देश की संस्कृति, सभ्यता तथा स्वाभिमान को नष्ट करना हो तो उसका इतिहास बदल दो। यही भारतीय इतिहास के साथ हुआ। धन्य हैं यतिवर महर्षि दयानन्द सरस्वती! जिन्होंने पाश्चात्यों के षड्यन्त्र को समझा और हमें सम्यक् इतिहास-दृष्टि प्रदान की। उन्होंने भारतीय इतिहास तथा इतिहास-लेखन को दिशा ही नहीं प्रदान की प्रत्युत प्रामाणिकता भी दी। सत्यार्थप्रकाश के एकादश समुल्लास में राजाओं की वंशावली इसका उदाहरण है, साथ ही पूना-प्रवचन में भी इसके संकेत हमें प्राप्त होते हैं।

स्वामी जी के समय से ही **'आर्यों के भारत आगमन'** की परिकल्पना प्रस्तुत कर दी गई थी। स्वामी जी ने प्रमाण और तर्क के साथ इस भ्रान्त धारणा का खण्डन किया। उस समय भारत में संभवत: महाराष्ट्रीय संत श्री गुलाबराव महाराज को छोड़कर किसी अन्य ने इस विषय पर लेखनी नहीं चलाई।

तत्कालीन अंग्रेजी शासकों ने इस भारतीय इतिहास के संबन्ध में क्या किया, इस पर कुछ विचार करते हैं। 19वीं शताब्दी भारत में पुनर्जागरणकी शताब्दी कहलाती है। यह वह अवधि थी जिसमें विलियम जोन्स द्वारा स्थापित बंगाल एशियाटिक सोसायटी ने भारतीय सभ्यता और संस्कृति के ग्रन्थों के संग्रह, शोध और प्रकाशन की योजना बनाई थी। कालान्तर में लॉर्ड मैकाले ने 1835 की रिपोर्ट में भारतीय चिन्तन, साहित्य और कला के इतिहास को उपेक्षित दृष्टिकोण से बहुत नगण्य स्वीकार किया। इस दृष्टि ने भारतीय जनमानस को बहुत आहत किया, लेकिन व्यवस्थित रूप से अंग्रेजी शासन द्वारा स्थापित इतिहासविद् एक योजना के अन्तर्गत ही इतिहास लिखते रहे थे। जब सिंधु घाटी सभ्यता की खोज हुई तो भारतीय इतिहास की पुन: विवेचना हुई और उसके लेखन के लिए यही लक्ष्य रखा गया कि भारत एक उन्नत सभ्यता और संस्कृति का देश कभी नहीं रहा। भारतीय इतिहास की तिथियों और यहाँ के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक इतिहास को तटस्थ भाव से पराधीनता के समय देखा नहीं गया, जिसका कारण भारतीय समाज में ग्लानि का भाव उत्पन्न करना और पश्चिमी सभ्यता का साहित्य, धर्म, संस्कृति, राजनीति सभी में श्रेष्ठ भाव प्रदर्शित करने का उद्देश्य था।

पश्चिमी इतिहासकारों ने औपनिवेशिक सोच को स्वीकार करते हुए ही इतिहास का लेखन किया। दुर्भाग्य यह हुआ कि भारतीय इतिहास को मार्क्सवादी चश्मे से देखने की कुप्रवृत्ति विद्यमान हुई जिसने भारतीय मेधा के वास्तविक महत्त्व को स्वीकार न कर वर्गभेद, लिंगभेद, भाषाभेद और धर्मभेद की कुत्सित मनोवृत्तियों को स्वीकार कर इतिहास का लेखन किया जिसे शासन द्वारा अधिक महत्त्व देकर प्रमाणित ही नहीं किया गया, अपितु उसे विद्यालयों में संप्रेषित करने का दुर्भाग्यपूर्ण प्रयास भी किया गया। प्रो. आर.एस. शर्मा, डी.डी. कौशाम्बी, प्रो. डी.एन. झा, प्रो. रोमिला थापर, प्रो. इरफान हबीब आदि इतिहासकारों ने इसी मनोवृत्ति का पल्लवन और पुष्पन किया और एक अलीगढ़ ऐतिहासिक स्कूल का विकास किया।

भारतीय मेधा निष्पक्ष भाव से यथार्थ शोध को स्वीकार करती रही है। भले ही वह घटना उनके विचार से उचित हो या ना हो। इतिहास की यथार्थ दृष्टि किसी भी देश और काल की मूल संस्कृति और सभ्यता से विलग होकर आँकी नहीं जा सकती। स्थापत्य, पुरातत्व, पुरालेख-शास्त्र, मुद्रा-शास्त्र, यात्री-वृत्तान्त, समकालीन साहित्य इत्यादि के समग्र चिन्तन से ही इतिहास का अध्ययन अभिप्रेत है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भारतीय इतिहास की जिस

मूल विचारधारा को चिन्तकों के समक्ष प्रस्तुत किया, उसने भारतीय जनमानस को प्राचीन संस्कृति पर गौरव और एक महान् धरोहर के रूप में चिह्नित ही नहीं किया, अपितु न्यायोचित दृष्टि से उसके अध्ययन, लेखन और प्रकाशन की महनीय योजना को प्रदीप्त भी किया, फलस्वरूप आर्य समाज के विद्वानों ने भारतीय इतिहास की पृष्ठभूमि और उसकी रूपरेखा को विपुल प्रमाणों के आधार पर प्रस्तुत करने का स्तुत्य प्रयास किया।

स्वतन्त्रता से पूर्व यह मानना उचित नहीं होगा कि पाश्चात्य इतिहासकार भारतीय सनातन संस्कृति पर निरपेक्ष भाव से लेखन का कार्य सम्पादित करेंगे, लेकिन स्वातन्त्र्योत्तर काल में भारत के इतिहास को भारत के संदर्भ में लिखने का प्रयास अवश्य किया जाना चाहिए था। खेद का विषय है कि तत्कालीन ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में विद्वानों ने विभिन्न वादों में ग्रस्त होकर इतिहास का लेखन किया। ''जरूरी नहीं कि कोई किसी विषय को बहुत अच्छी तरह जानता ही हो, पर जानने, समझने की अल्पतम योग्यता तो होनी ही चाहिए और इसके बिना भी, मात्र गौण स्रोतों के बल पर 'मौलिक' उद्भावनाएँ करना तो इसे और विडम्बनापूर्ण बना देता है। वैदिक साहित्य के विषय में इतना कम जानने वाले बुद्धिबलियों ने इतिहासकारों की कई पीढ़ियों को अपने जैसा बनाया और इतिहास को वहाँ पहुँचाया जहाँ पहुँचने से इसे रोका जा सकता था। 'जा का गुरु भी आँधरा चेला खरा निरंध। अंधे अंधाँ ठेलिया दोऊ कूप पड़ंत।''[1]

इतिहास लेखन की अलीगढ़ परम्परा भारत के इतिहास को मार्क्सवादी दृष्टि से लिखने पर बल देती है न कि भारतीय सामाजिक मूल्य, परम्पराओं, कला और संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में। उनका एकमात्र ध्येय इस बात पर निर्भर करता है कि पूंजी, शोषित, वर्गभेद इन सभी स्थितियों की व्याख्या वे केवल मार्क्सवाद के संदर्भ में ही करना चाहते हैं। इस सम्बन्ध में डी.डी. कौशाम्बी को मार्क्सवादी इतिहास की परम्परा का सर्वाधिक पोषक माना जाता है। कौशाम्बी को इस विचारधारा के विद्वानों ने इतिहास का सर्वश्रेष्ठ ज्ञाता स्वीकार कराने में उसे विभिन्न प्रकार के पुरस्कार दिलाए और उसके माध्यम से भारतीय इतिहास दृष्टि को नये रूप **में गढ़ने का कार्य किया गया। इतिहास लेखन में वस्तुनिष्ठ और विषयनिष्ठ इन दोनों अवधारणाओं में से इतिहासविदों** ने इतिहास को वस्तुनिष्ठ भाव से नहीं लिखा। परिणाम हमारे सामने है कि हम भारतीय समाज और संस्कृति के विषय में आज भी उन पश्चिमी विचारों की अवधारणाओं से ग्रसित हैं जिनका मूल भाव भारत के श्रेष्ठ तत्वों को मानने का ही नहीं था।

आगे हम कुछ पाश्चात्य भारतविदों के उद्धरण प्रस्तुत कर रहे हैं जिनसे यह सुस्पष्ट होता है कि उनका प्राचीन भारत-विषयक ऐतिह्य-लेखन दुर्भावनापूर्ण था-

1. ''लेकिन इस पुराने धर्म के दिन लद चुके हैं और यदि ईसाइयत इसका स्थान नहीं लेती तो यह किसका दोष होगा?'''' अभी भी हिन्दू धर्म के 110,000,000 अनुयायी हैं... इसके बावजूद मुझे यह कहने में तनिक संकोच नहीं कि उनका धर्म मरणासन्न है अथवा मर चुका है...। शिव, विष्णु और अन्य लोकप्रिय देवताओं की पूजा....उस वैचारिक धरातल की है जिसे हम कब का अपने पैरों तले दफना चुके हैं। सिंह और बाघ की भाँति यह चल सकता है, किन्तु स्वतन्त्र ख्याल और सभ्य जीवन का झोंका इसे उड़ा ले जाएगा...। किसी भी पढ़ने-लिखने तथा समझ सकने वाले हिन्दू से पूछो कि क्या वह इन्हीं देवताओं में विश्वास करता है, तो वह तुम्हारे भोलेपन पर हँसेगा।'' - **मैक्समूलर**[2]
2. हिन्दू घोर भ्रष्ट एवं व्यभिचारी हैं, क्योंकि उनके देवता ही भ्रष्ट एवं व्यभिचारी हैं। **यह गर्हित धर्म छान-बीन नहीं बर्दाश्त कर सकता**, क्योंकि इसकी बुनियादी मान्यताएँ ही झूँठ और भ्रांति में अन्तर्गुम्फित हैं।.... ''प्रत्येक युवा ब्राह्मण...जो हमारे कॉलेजों में भूगोल सीखता है, हिन्दू मिथकशास्त्र पर हँसना सीखता है।''
   - टी.बी. मैकाले
3. ''इसका (भारत का) विशाल क्षेत्र आखिर किस उद्देश्य से इंग्लैण्ड के अधीन किया गया है। इसलिए नहीं कि इसे राजनीतिक, सामाजिक अथवा सामरिक प्रयोगों का अखाड़ा बनाया जाए और न इसलिए कि इससे वाणिज्य में लाभ अथवा दौलत में इजाफा हो, बल्कि इसलिए कि कन्याकुमारी से लेकर हिमालय तक आबाल वृद्ध-वनिता को ऊँचा उठाया जाए, उन्हें प्रबुद्ध किया जाए और उन्हें ईसाइयत के घेरे में लाया जाए....?'' -
   - मोनियर विलियम्स
4. **''चूंकि सिर्फ ईसाई-धर्म ही मानव जाति के मनोवेगों**

से उत्पन्न अव्यवस्थाओं को दुरुस्त करने और शनैः-शनैः विश्व को पूर्णता की स्थिति तक ले जाने में समर्थ है, इसलिए यह दैवी उद्‌गम का धर्म है, और हम इसके संस्थापक ईसामसीह के आदेश का अनुसरण करते हुए इसे विश्व-धर्म बनाने के लिए पाबंद हैं।''

- **सर चार्ल्स ट्रेविलियन**

5. भारत अज्ञान, अन्याय तथा झूँठ की खोज है।
6. इस स्थिति का मुख्य कारण हिन्दू धर्म है।
7. इसके लिए हिन्दू धर्म को उखाड़ फेंकना आवश्यक है।
8. इसके बावजूद, शासन का सहयोग निर्णायक होगा। सरकारी स्कूलों को ही ले लें। इसमें अंग्रेजी भाषा पर जोर देने से छात्रों के लिए ईसाइयत का द्वार स्वतः खुल जाएगा। इसके द्वारा आधुनिक विज्ञान तथा भूगोल की शिक्षा दी जाने से हिन्दू धर्म स्वतः धीरे-धीरे दुर्बल होकर आखिर नष्ट हो जाएगा, क्योंकि यह धर्म ''एक क्षण की भी छान-बीन'' झेल पाने में समर्थ नहीं है। यह आधारभूत धारणाओं, दार्शनिक विचारों, विश्वासों एवं दैनिक आचरणों का घालमेल है, यह ऐसी भ्रांतियों और झूँठों से ग्रस्त है कि यदि इसके दिक्, काल, भूगोल तथा इतिहास-सम्बन्धी धारणाओं की कलई खोल दी जाए तो पाश्चात्य शिक्षा के झोंके से वे स्वतः उड़ जाएँगी।
9. मिशनरियों का कार्य बदले में ब्रिटिश हुकूमत के सुदृढ़ीकरण एवं स्थायीकरण में सहायक होगा। न सिर्फ धर्मान्तरित लोग अपितु पाश्चात्य विद्या तथा मूल्यों में दीक्षित लोग भी अपने हित-साधन के लिए इस शासन का स्थायीकरण चाहेंगे।[3]

इन उपर्युक्त सम्मतियों से यह सुस्पष्ट है कि भारत के तथाकथित पुनर्जागरण काल में भारतीय इतिहास-लेखन का कार्य ऐसे दुर्भावनापूर्ण अभियान के रूप में प्रारम्भ हुआ जिसका मूल उद्देश्य ही भारत में अंग्रेजी राज को चिरकाल तक बनाए रखना था।

होना यह चाहिए था कि भारत की स्वतन्त्रता के बाद इस विधा को गम्भीरता से लिया जाता, परन्तु भारत के राजनीतिक परिदृश्य में पंडित नेहरू का उदय हो चुका था, जो दुर्भाग्य से प्राचीन भारत की हिन्दू-वैदिक सभ्यता को लगभग सर्वांश में दूषित, अन्धविश्वासपूर्ण और अवैज्ञानिक मानते थे। राहुल सांकृत्यायन जैसे भ्रान्त दार्शनिक और इतिहासकार का उन्हें सहारा मिला। साथ ही अपरिपक्व चिन्तन और विचारधारा वाले राष्ट्रीय नेताओं ने पं. नेहरू की एतद्‌विषयक धारणाओं को और परिपक्व किया, भारतीय विद्याभवन का 'वैदिक एज' नामक पोथा इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। साथ ही पं. नेहरू के समाजवाद के साथ कदमताल करने वाले कम्युनिस्ट बुद्धिजीवियों का उदय हो चुका था, जो स्वयं प्राचीन भारतीय सभ्यता, संस्कृति के उन्नयन के नाम पर बौद्धों के अतिरिक्त किसी अन्य को प्रमाण मानने को स्वीकार नहीं थे। वैदिक सभ्यता-संस्कृति के तो ये घोर शत्रु रहे।

आर्य समाज ने इतिहास-लेखन को प्रारम्भ से ही अपना स्वाभाविक धर्म माना और प्रमाणपूर्वक वैज्ञानिक इतिहास-लेखन किया। महर्षि के पश्चात् पण्डित भगवद्दत्त इस महान् परम्परा के सूत्रधार के रूप में सामने आए। भारतीय इतिहास के सभी पक्षों पर उन्होंने चुनौती के साथ लेखन किया, अनेक देशी-विदेशी विद्वानों ने उनकी प्रशंसा भी की, परन्तु भारतीय शासन ने न केवल उनकी उपेक्षा की, प्रत्युत विश्वविद्यालयों में उनके लेखन को प्रविष्ट ही नहीं होने दिया। पं. भगवद्दत्त ने भारत-विभाजन के बाद दिल्ली आकर समकालीन इतिहासविदों को खुली चुनौती दी कि वे इतिहास की अवधारणा पर खुली बहस करें। लेकिन शासन से समर्थित न होने के कारण न तो विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में और न ही कला, संस्कृति, समाज विज्ञान जैसे क्षेत्रों में भारतीय इतिहास दृष्टि को समन्वित किया गया। इतिहास को भारतीय परिप्रेक्ष्य में लिखने को, ऐसे पश्चिमी विचारधारा के पोषक इतिहासविद्, साम्प्रदायिक विशेष का इतिहास कहते हैं। यह उनकी कुण्ठाओं को स्पष्ट करता है। उनकी परम्परा में बाद में अनेक आर्य विद्वान् हुए, जिन्होंने विभिन्न जटिल ऐतिह्य विषयों पर शोधपूर्ण कालजयी लेखन किया। पंडित युधिष्ठिर मीमांसक का 'संस्कृत व्याकरण-शास्त्र का इतिहास' अपने आप में एक मानदण्ड है। पं. रघुनन्दन शर्मा, पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति, आचार्य रामदेव, चन्द्रगुप्त वेदालंकार भाई परमानन्द, पं. उदयवीर शास्त्री, आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री, स्वामी विद्यानन्द, प्राचीन भारत में विज्ञान की समृद्ध परम्परा को दर्शाने वाले स्वामी सत्यप्रकाश जी और वर्तमान में-विभिन्न पुरालिपियों के ज्ञाता, पुरातत्त्वनिष्णात

शेष भाग पृष्ठ संख्या ४० पर...

संध्योपासना क्यों-३

प्रवचनकर्त्ता - डॉ. धर्मवीर
लेखिका - सुयशा आर्य

यह लेख आचार्य धर्मवीर जी द्वारा बिलासपुर (छत्तीसगढ़) में दिये गये प्रवचन का संकलन है। ये प्रवचन एक निश्चित विषय पर दिये गये हैं, इसलिये अति उपयोगी हैं। इन प्रवचनों को आचार्य प्रवर की ज्येष्ठ पुत्री सुयशा आर्य द्वारा लेखबद्ध किया गया है। - **सम्पादक**

पिछले अंक का शेष भाग.....

एक बार मैं रामदेव जी के यहाँ व्याख्यान दे रहा था तो एक विदेशी ने कुछ सवाल किया। मेरे एक साथी ने कहा कि इन यूरोपियनों की आधी भाषा पार्डन (pardon) में और सॉरी (sorry) में चली जाती है, बाकी कुछ नहीं होता। बात-बात में सॉरी, बात-बात में थैंक्यू। इनकी भाषा में से यदि कुछ शब्द निकाल दो तो आधी बात नहीं बोलते ये। इतनी बार सॉरी, थैंक्यू बोलते हैं। जब हम हर बात के लिए धन्यवाद-धन्यवाद करते हैं तो एक कल्पना करके देखो कि जिसने इतना सब हमारे लिये किया है, हम उसे देव कहते हैं. देने वाले को देव कहते हैं लेकिन वो तो बिना माँगे देता ही रहता है। ऐसा नहीं है किसी को देता हो और किसी को न देता हो, कभी देता हो और कभी न देता हो, ऐसा भी नहीं है कि थोड़ा-सा देता हो। देने में भी असीम है, लेने वालों की संख्या कितनी भी हो सकती है। देने के समय का कोई प्रतिबन्ध भी नहीं है। जब इतना सब कोई देने वाला है तो उसकी ओर हमारा ध्यान जाना स्वाभाविक है। इसलिये स्वामी जी महाराज कहते हैं कि जो व्यक्ति संध्या नहीं करता वो कृतघ्न और मूर्ख है। कृतघ्न तो इसलिए है कि वो किए हुए उपकार को मानता नहीं है, वो शिष्ट नहीं है। जब एक सामान्य व्यक्ति की दृष्टि में, एक सामान्य साथी की दृष्टि में, माता-पिता की दृष्टि में, गुरुजनों की दृष्टि में, अधिकारी की दृष्टि में हम सभ्य बनना चाहते हैं, शिष्ट बनना चाहते हैं, कृतज्ञ बनना चाहते हैं, अच्छे बनना चाहते हैं तो ये बात कैसे हो सकती है कि हम परमेश्वर की दृष्टि में सभ्य, शिष्ट और कृतज्ञ न बनें। हम संध्या करते हैं तो परमेश्वर के प्रति क्या करते हैं? कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। उसने जो कुछ हमें दिया है उसके प्रति हम कृतज्ञता व्यक्त करते हैं तो इसलिए संध्या करके कृतघ्न बनने से बचते हैं।

किसी के सामर्थ्य को बिना जाने जो व्यवहार किया जाता है, वो मूर्खता का व्यवहार होता है। हम किसी से अशिष्टता कब कर सकते हैं, जब उसके महत्त्व को हम स्वीकार नहीं करते हैं। किसी के बड़प्पन को जब हम जानते हैं, किसी के सामर्थ्य से जब हम परिचित होते हैं तो उससे हम गलत व्यवहार नहीं करते हैं। कई बार अनजाने में कोई गलत व्यवहार हो जाता है, फिर पता लगता है। यह तो अमुक आदमी था। हम दौड़कर जाते हैं, भाई साहब गलती हो गई, मैं पहचान नहीं पाया। जब एक सामान्य व्यक्ति को पहचानने में भूल होने पर आपको पश्चाताप होता है, दुःख होता है तो उस ईश्वर की पहचान न होने पर आपको दुःख न हो, खेद न हो-यह कैसे हो सकता है? इसलिए संध्या करना कृतज्ञता और अच्छा कार्य है, विद्वत्ता का कार्य है, बुद्धिमत्ता का कार्य है, श्रेष्ठता का कार्य है।

हमारी संध्या वास्तव में देखा जाये तो कुछ भी नहीं है, जो हमने पाया है उसका धन्यवाद है और जो हमारी इच्छा है उसके लिए प्रार्थना है। **परमेश्वर का धन्यवाद करना और आगे के लिए प्रार्थना करना यह संध्या का मुख्य उद्देश्य होता है।**

प्रार्थना को आप यह मत समझिए कि केवल माँगना ही प्रार्थना है। प्रार्थना का अभिप्राय होता है कि जो हम चाहते हैं उसके लिए यत्न भी करते हैं, वह यत्न भी प्रार्थना का अंग होता है। मान लीजिए कि आप भगवान् से प्रार्थना करते हैं कि दुकान में आय हो, लेकिन घर बैठ के, दुकान बन्द करके तो आय नहीं कर सकते। आय के लिए दुकान तो खोलनी पड़ेगी। दुकान खोलनी पड़ेगी तो ग्राहक के

लिए भी यत्न करना पड़ेगा। उसके लिए व्यवहार भी अच्छा करना पड़ेगा। माल भी अच्छा देना पड़ेगा। सब काम करके शाम को देखोगे कि गल्ले में कुछ पैसे ज्यादा आए हैं, तो आप कहेंगे-आज भगवान् ने मेरी सहायता की अर्थात् भगवान् आपकी सहायता करता है प्रार्थना करने से। प्रार्थना का मतलब होता है जो आवश्यक कार्य हैं, आवश्यक बातें हैं वो सब आप यथावत् करने का यत्न करें और उनको सम्पन्न करें। किसान जब प्रार्थना करता है तो कहता है कि मेरे खेत में खूब सारा गेहूँ पैदा होना चाहिए। लेकिन खेत ही न हो तो? खेत भी चाहिए, खेत के अन्दर उसको हल भी चलाना पड़ेगा, पानी भी देना पड़ेगा। रखवाली भी करनी पड़ेगी, समय-समय पर उसकी देखभाल भी करनी पड़ेगी और जब फसल उग जाएगी और गाड़ी में रख कर ले आएगा, तब कहेगा-भगवान् ने मुझे बहुत दिया है। भगवान् ने मेरी प्रार्थना सुन ली। आप कब कहते हैं कि प्रार्थना सुन ली? जब आपका काम पूरा हो जाता है। इसलिये प्रार्थना तब तक अधूरी है जब तक काम पूरा नहीं हो जाए, अर्थात् प्रार्थना केवल शाब्दिक नहीं होती। प्रार्थना व्यवहार में आती है, कर्म के रूप में होती है। आप मन में सोचते हैं,उसको लिखते हैं, जाते हैं उस चीज को लाते हैं, वो सब जो करते हैं, ये सब हिस्सा प्रार्थना में होता है। आप भोजन पकाते हैं, तो पकाने में केवल एक काम नहीं होता है। चावल के निकालने से लेकर, बटलोई को चूल्हे से उतारने तक सब क्या है? पकाना। वैसे ही संध्या में कहते हैं कि भगवान् आज के दिन जो गलतियाँ हुईं, अगले दिन ये गलती नहीं होंगी। ये भूल नहीं होगी। यह एक बहुत बड़ा सिद्धान्त है और इस सिद्धान्त पर हमारे ऋषि लोग बहुत ध्यान देते हैं। यह बात प्रातःकाल जब हम उठते हैं तब से प्रारम्भ हो जाती है। इसके लिए मनु महाराज ने एक बड़ी सुन्दर पंक्ति लिखी है- **ब्राह्मे मुहूर्ते बुध्येत धर्माथौ चानुचिन्तयेत्। कायक्लेशांश्च तन्मूलान् वेदतत्त्वार्थमेव च।।**

ब्राह्मे मुहूर्ते बुध्येत मनुष्य को ब्राह्म मुहूर्त में उठना चाहिए। मैंने आपसे पहले भी कहा हुआ है कि मनुष्य का अपना जो समय, अपने लिए कुछ करने का समय कौन-सा है? प्रातः चार बजे से सात बजे के बीच में। इसके बाद का समय तो परिवार का है, समाज का है, दूसरे लोगों का है। आप संध्या करना चाहें, आप व्यायाम करना चाहें, आप संगीत सीखना चाहें, आप स्वाध्याय करना चाहें आप भजन करना चाहें, कुछ भी करना चाहें तो उसका समय ब्राह्म मुहूर्त है। इसलिए ऋषि कहते हैं **'ब्राह्मे मुहूर्ते बुध्येत'** और क्या करें? **धर्माथौ चानुचिन्तयेत्** धर्म और अर्थ का चिन्तन करें। क्या करना है क्या नहीं करना है और कैसे लाभ लेना है, लाभ के क्या-क्या उपाय हैं। एक और रोचक बात श्लोक में लिखी है- **कायक्लेशांश्च तन्मूलान् वेदतत्त्वार्थमेव च** यदि मनुष्य को देखें तो मनुष्य दुनिया के सारे काम करता है, सदा करता रहता है, लेकिन वो सबसे कम अपने बारे में सोचता है। अपने शरीर के बारे में सबसे कम सोचता है और वो सोचता भी तब है जब मजबूर हो जाता है-उसके पैर में दर्द हो, उसकी आँख में दर्द हो, उसके कान में दर्द हो अर्थात् ये सब बातें तब होती हैं जब ज्यादा दर्द हो जाता है। लेकिन यहाँ मनु महाराज कहते हैं-**कायक्लेशांश्च तन्मूलान्**-यह मुख्य बात है। प्रतिदिन मनुष्य को यह सोचना चाहिए कि उसके शारीरिक कष्ट क्या हैं और उनका कारण क्या है। जब यह सोच लेता है, तब मनु कहते हैं-**वेदतत्त्वार्थमेव च** थोड़ा सा फिर वेद के बारे में भी चिंतन करना चाहिए, वेद के बारे में भी ध्यान करना चाहिए। हमारे यहाँ चिन्तन की परम्परा है, इस दृष्टि से हम संध्या में भी यह चिन्तन करते हैं कि हमसे क्या बुरा हुआ है और क्या अच्छा हुआ है। संध्या अपने आप में पूरा का पूरा अष्टांग योग है। मतलब, यम नियमों का पालन तो २४ घंटे करना होता है, उसके बाद जितना भी काम है वो सब संध्या में शामिल हो जाता है। आसन है, प्राणायाम है, प्रत्याहार है, धारणा है, ध्यान है, समाधि है, इसके विस्तार में नहीं जायेंगे। लेकिन संध्या में इसका विशेष उपयोग होता है।

हमें संध्या क्यों करनी चाहिए अब इस पर विचार करते हैं। सबसे पहली चीज हुई कि हम एक सभ्य मनुष्य बनें, इसलिए संध्या करनी चाहिए। हम कृतज्ञ व्यक्ति बनें, इसलिए संध्या करनी चाहिए। हमें अपने दुःखों का निवारण करना है, हमें अपने दुःखों का उपाय करना है, इसलिए संध्या करनी चाहिए क्योंकि संध्या करने से हमारे दुःख

कम होते हैं। क्यों कम होते हैं? एक तो इसलिए कम होते हैं कि हम परमेश्वर का स्मरण करके कोई काम करें तो अनुचित काम हम नहीं करेंगे और दूसरा, आज बीमारियों का, दु:खों का एक सबसे बड़ा कारण है तनाव। आप छोटे से छोटे बच्चे से बात करो तो tension की बात करता है। एक शब्द प्रचलित हो गया है tension। उसकी गंभीरता को, उसकी वास्तविकता को हम कई बार अनुभव ही नहीं करते हैं। हमें बहुत छोटी-छोटी बातों पर तनाव आ जाता है। मूल चीज यही है कि कौन कितना सह सकता है। जो जितना सह सकता है वो उतना मजबूत होता है। वो उतनी दूर तक चल सकता है। एक व्यक्ति किसी छोटी सी बात पर गुस्सा कर लेता है, दूसरा व्यक्ति बड़ी दुर्घटना हो जाने पर भी चिन्ता नहीं करता है। मैं किसी व्यक्ति के साथ बैठा था, तो वह कहने लगा कि जापान में कभी कोई गाड़ी टकरा जाती है (वैसे तो टकराती नहीं) तो दोनों जापानी चालक गाड़ी से उतरते हैं, एक-दूसरे का अभिवादन करते हैं और वापस बैठकर चले जाते हैं। एक समझता है कि मेरे से गलती हुई, दूसरा समझता है मेरे से गलती हुई, उनको तनाव ही नहीं होता। और हमारे यहाँ रास्ते में से गाड़ी नहीं हटे या गाड़ी थोड़ी सी छू जाए तो एक-दूसरे की जान ले लेते हैं, मार-पीट कर देते हैं, क्यों? हम सहन नहीं कर पाते। सहन क्यों नहीं कर पाते? क्योंकि संध्या करने से जो सबसे बड़ी बात मनुष्य में आती है, वो है सहनशक्ति। जो व्यक्ति संध्या करता है, वो सहनशील होता है, क्योंकि सबसे बड़ा सहनशील कौन है- परमेश्वर है। परमेश्वर आपको हर तरह से सहन करता है और वह इसलिए सहन करता है, क्योंकि आपको वो अपना समझता है। हम बच्चों की बात क्यों सहन करते हैं और तो किसी को नहीं सहन करते, लेकिन अपने बच्चों की उल्टी से उल्टी बातें भी सहन कर लेते हैं। कोई दूसरा हमें एक बार गाली देता है, तो हम जीवन भर नहीं भूलते और हमारा बच्चा जीवन भर गाली देता है तो एक बार भी नहीं बोलते क्यों? क्योंकि हमने उसे अपना समझ रखा है, इसलिए हम उसको सहन कर लेते हैं। परमेश्वर कहता है कि सहनशील बनो। सहनशील कब बनोगे? जब तुम उसे अपना समझोगे। संध्या करने से मनुष्य सहनशील बनता है, तनाव से ग्रस्त नहीं होता है। यह बात मैंने पहले भी कही होगी आपसे कि जब कभी कोई व्यक्ति मन्दिर में जाके सुखद अनुभूति करता है, तीर्थयात्रा में जाकर शान्ति अनुभव करता है, उसका कारण होता है कि मनुष्य का ध्यान अपनी जगह से बँट जाता है और ध्यान बँट जाने से उसका जो मस्तिष्क का तनाव था वो अपने आप कम हो जाता है, छूट जाता है। फिर दोबारा तनाव आने में तो समय लगेगा। जैसे आप वाद्ययन्त्रों को देखेंगे कि उनको हर समय कसा हुआ नहीं रखते, जब आप उसको बजाते हैं, तभी कसते हैं और जब बजाते नहीं हैं तो उसे कसते नहीं हैं। वैसे ही हमारे मस्तिष्क के तन्तुओं में तनाव तब आना चाहिए, जब हम उनसे कोई कार्य ले रहे हों, कोई अतिरिक्त बोझ उन पर डाल रहे हों। हर समय उनको कसे रखें- इसका क्या मतलब हुआ? ये गलत हो जाएगा। जैसे वो चीज, वो यन्त्र, वो वाद्य खराब हो जाता है, वैसे ही हम भी खराब हो जायेंगे। इसलिए शास्त्र कहता है कि आप तनाव से मुक्त कैसे हो सकते हैं- तनाव से मुक्त तभी हो सकते हैं, जब कभी आप अपने से बड़े के पास जायें, अपने से अच्छे के पास जायें। ऐसा व्यक्ति हो जो शान्त हो, जो हमारे लिए अच्छा हो,जानकार हो, उसके पास जायें। वो कौन हो सकता है? और तो कोई हो या न हो, परमेश्वर तो है ही। इसलिए जब हम परमेश्वर का चिन्तन करते हैं तो हमारा जो छोटापन है, मिट जाता है, क्योंकि जब हमें किसी बड़ी सहायता की आशा होती है तो हमारे छोटे दु:ख भाग जाते हैं। इसलिए हमें कहीं सहायता मिल सकती है, तो ईश्वर से मिल सकती है।

शेष भाग अगले अंक में.....

अग्नि और जल संसार के सब व्यवहारों के कारण हैं, इस से गृहस्थजन विशेष कर अग्नि और जल के गुणों को जानें और गृहस्थ के सब काम सत्य व्यवहार से करें।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२४

जब तक सब की रक्षा करने वाला धार्मिक राजा वा आप्त विद्वान् न हो तब तक विद्या और मोक्ष के साधनों को निर्विघ्नता से पाने के योग्य कोई भी मनुष्य नहीं होता है और न मोक्षसुख से अधिक कोई सुख है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५२

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग—साधना शिविर

दिनांक : १८ से २५ जून, २०१७

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान-विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग-साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक-दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।

२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।

३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य-सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।

४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।

५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि-उद्यान परिसर में ही की जायेगी।

६. बाह्य-वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे- समाचार-पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखने आदि पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।

७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा- खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।

९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय-कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।

१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन-सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।

११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ-मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है।

ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं, शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेलवे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

email:psabhaa@gmail.com **-संयोजक**

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को स्थान दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हों। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छः माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें। **-संपादक**

कुछ तड़प-कुछ झड़प

प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

डॉ. दिनेशचन्द्र जी कौन हैं- बहुत से गुणी पाठक परोपकारी के नये सम्पादक डॉ. दिनेशचन्द्र जी का परिचय पूछते रहते हैं। आज मान्य डॉक्टर जी का अत्यन्त संक्षिप्त परिचय दिया जाता है। आपका पहला परिचय यह है कि आप आर्यसमाज के लिये पूज्य पं. बिहारीलाल शास्त्री की देन हैं। श्री डॉ. धर्मवीर जी के सत्संग व सम्पर्क से और अधिक दृढ़, सिद्धान्तनिष्ठ, वैदिक-धर्मी बन गये। आप तीन वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के उप-कुलसचिव पद से सेवानिवृत्त हुये हैं। सेवानिवृत्ति के पश्चात् आप कई आर्य संस्थाओं के निदेशक हैं। डॉ. दिनेश बहुमुखी प्रतिभा के धनी, कई विषयों के अधिकारी विद्वान्, सिद्धहस्त लेखक, पत्रकार तथा आई.ए.एस. परीक्षार्थियों के गुरु हैं। सुयोग्य सन्तान के पिता, निर्माता, आर्य परिवार के मुखिया, प्रेमल, विनम्र आर्य सेवक तथा परोपकारिणी सभा के संयुक्त मन्त्री हैं। आपकी सुयोग्य युवा सन्तान भी आर्य विचारधारा के रंग में रंगी हैं। आपके दोनों पुत्र मृत्युञ्जय एवं निष्काम एवं बड़ी पुत्रवधू सौ. सुजीता ने आर्यसमाज के विद्वानों पर शोध (पीएच.डी.) किये हैं। आपने अनेक छात्रों को आर्यसमाज एवं आर्य विद्वानों पर शोधकार्य करने की प्रेरणा दी है। शेष फिर कभी लिखेंगे।

उत्तर ले लीजिये- विश्व पुस्तक मेले में प्रचारित कादियानियों की एक पुस्तक का उत्तर माँगा गया है। हम समझते थे कि कोई सभा, संस्था या नया रिसर्च स्कॉलर इसका उत्तर दे देगा। संक्षेप से इसकी शव परीक्षा किये देते हैं। मिर्ज़ाई रिसर्च भी कमाल की होती है। इसमें कहा गया है कि वेदों में अहमद (गुलाम अहमद मिर्ज़ाई नबी) तथा कादी (कादियाँ) का उल्लेख है। यह मिर्ज़ा के आने की भविष्यवाणी है। इस हास्यास्पद चुटकुले पर कादियाँ की बड़ी इल्हामी 'मस्जिदे अकसा' में श्रद्धेय पं. त्रिलोकचन्द्र जी मिर्ज़ाई रिसर्च की धज्जियाँ उड़ा चुके हैं। अब फिर बासी कढ़ी में उबाल आ गया है।

मिर्ज़ाई नबी को तो वेदों में अपने नाम का अल्लाह मियाँ ने पता न दिया और न ही कादियाँ विषयक भविष्यवाणी की। उसने बुराहीने अहमदिया तथा हक़ीकत उलवही में चर्चा की है। पं. लेखराम के सामने भी मिर्ज़ा को इल्हामी कोठे में ख़ुदा ने यह प्रमाण न बताया। न ही हक़ीम नूरउद्दीन को पता चला।

कुरान में स्वामी सत्यप्रकाश, शान्तिप्रकाश, पं. लेखराम- मिर्ज़ाई नोट कर लें कि कुरान में सूरते 'नूर' पर विचार तो करो। नूर अर्थात् प्रकाश-सारी सूरत सत्यार्थप्रकाश, शान्तिप्रकाश जी शास्त्रार्थ महारथी, श्री विश्वप्रकाश, डॉ. सूर्यदेव, आचार्या डॉ. सूर्यादेवी की महिमा के लिये उतारी गई है। हमारे इस विचार का प्रतिवाद तो करके दिखाओ।

कुरान में सूरते कमर (चन्द्र) हमारे पं. रामचन्द्र देहलवी जी, पं. चन्द्रभानु जी, प्रो. उत्तमचन्द्र जी 'शरर' की शान में उतारी गई। सूरते रहमान (दयावान्-दयालु) ये सारी सूरत ऋषि दयानन्द के आगमन की शुभ सूचना है।

पं. लेखराम की शान में सूरत- मिर्ज़ाई मित्रो! कुरान की सूरत संख्या ६८ का नाम ही कलम (लेखनी) है। इसकी सब ५२ आयतों को पं. लेखराम जी लेखनीवाले के आगमन की सूचना देने के लिये उतारा गया था। आपकी मनगढ़न्त तावीलें Interpretations (व्याख्यायें) सुन-सुनकर सब मुसलमान तथा अल्लाह ताला भी हैरान परेशान हैं। हमें तो कुछ अन्तर नहीं पड़ता। हमें तो लेखनीवाला पं. लेखराम उत्तर देना सिखा गया है।

ऊपर जो कुछ लिखा गया है, ये बातें हमें स्वप्न में अल्लाह ताला ने सन् १९५० में कादियाँ में ही बता दी थीं। **हम पर यह इल्हाम कादियाँ में ही उतरा था।** इसे कौन झुठला सकता है? अल्लाह के मुख से तब लेखराम की चर्चा सुनकर हमारी आँख खुल गई। न जाने अब नया इलहाम कब उतरे। सम्भव है कभी फिर कादियाँ जाने पर इलहाम उतरने लग जायें।

सम्पूर्ण जीवन चरित्र- महर्षि दयानन्द विषयक प्रश्न- एक प्रेमी ने दिल्ली से आर्यजगत् के एक अंक में श्री भावेश मेरजा जी के श्रद्धेय पं. लक्ष्मण जी आर्योपदेशक

द्वारा लिखित ऋषि जीवन के प्रथम व द्वितीय संस्करण के प्रकाशन वर्ष विषयक प्रश्न की ओर हमारा ध्यान खींचा है। उनका प्रश्न इतिहास-प्रेमियों के लिये अच्छा है-उपयोगी है। हमने अपने कुछ लेखों व पुस्तकों में इसकी कहीं-कहीं चर्चा की है। मिलने वालों को भी जानकारी देते रहते हैं। संक्षेप से अपनी खोज व चिन्तन को यहाँ आगे देते हैं-

१. प्रथम विश्व युद्ध के समय सन् १९१५ में यह ग्रन्थ छप चुका था। इन पंक्तियों के लेखक का यह मत है कि इसका अधिकांश भाग तो सन् १९१४ से दो-तीन वर्ष पहले ही लिखा जा चुका था, परन्तु कुछ भाग (विशेष रूप से पहला भाग) छपते-छपते प्रेस में दिया गया। इसका प्रमाण 'सम्पूर्ण जीवन-चरित्र' के पृष्ठ ६४ पर श्रीमान् महात्मा हंसराज जी का जनवरी १९१४ का कथन है। छपने में लगभग एक वर्ष तो लगा ही होगा। उस युग में प्रेस इतनी फुर्ती से तो कार्य करते नहीं थे।

२. सन् १९१६ के आरम्भ में निश्चित रूप से यह ऐतिहासिक ग्रन्थ बाजार में प्राप्य था। इसका विज्ञापन इस समय हमारे सामने है। यह ग्रन्थ सन् १९१४ में कातिबों को सौंपा जा चुका था। रातों-रात तो इतना बड़ा ग्रन्थ छपना असम्भव है।

३. दूसरा संस्करण भी थोड़े ही समय में लाना पड़ गया । उसके प्रकाशन के वर्ष की समस्या उलझी-सी है। उस पर भी 'प्रथम बार' ही छपा है, परन्तु दोनों भाग इकट्ठे हमारे पास हैं। एक प्रति हमने परोपकारिणी सभा को भेंट कर दी है। इसके साथ ऋषि का चित्र व समर्पण के पृष्ठ भी नहीं है। हमारे पास दोनों संस्करण हैं। जिस पुस्तक का प्रकाशन वर्ष विषयक भावेश जी ने प्रमाण दिया, वह तो एकदम अविश्वसनीय है। आगे कभी फिर पूरक जानकारी देंगे।

एक स्मरणीय कार्यक्रम- पिछले दिनों भरतपुर में परोपकारिणी सभा के तत्त्वावधान में वाल्मीकि भाइयों की बस्ती में एक विशाल और प्रेरणाप्रद यज्ञ का आयोजन किया गया था। इस कार्यक्रम के लिये श्री लक्ष्मण जी जिज्ञासु का उद्योग विशेषरूप से प्रशंसनीय रहा। श्री पं. रामनिवास जी का सहयोग तथा 'भारत विकास परिषद्' तथा संघ के जिन भाइयों ने इसमें भाग लेकर शोभा बढ़ाई-वे सब बधाई के पात्र हैं। वाल्मीकि भाइयों की श्रद्धा व उत्साह तो वन्दनीय है ही। आगे भी सभा द्वारा ऐसे कई उत्तम कार्यक्रम होते रहेंगे। श्री ओममुनि जी का भरतपुर का भाषण उनके जीवन का सर्वोत्तम भाषण कहा जा सकता है।

भ्रामक-दुष्प्रचार- पता चला है कि एक स्वयंभू विचारक ने यह भ्रम फैलाना चाहा है कि उसकी प्रेरणा से ही सभा ने यह यज्ञ रचाया है और वह भविष्य में भी सभा को ऐसी-ऐसी प्रेरणायें देता रहेगा। इससे यह तो प्रमाणित हो गया कि वह सभा की सेवाओं का मन से प्रशंसक है। रहा प्रश्न उसकी प्रेरणा का सो यह तो वैसी ही कहानी बन गई कि कभी पं. नेहरू जी आगरा गये तो वहाँ पागलख़ाना देखने की मौज आई। वहाँ उन्हें घुमाया जा रहा था तो एक कमरे में से एक उन्माद रोगी चिल्ला-चिल्ला कर उनको अपने पास बुलाता रहा। अधिकारी पण्डित जी को वहाँ जाने न देते थे। वह बहुत भयङ्कर रोगी था। पण्डित जी भी पण्डित जी थे, उसको निराश न किया। उसके समीप गये तो उसने पण्डित जी का परिचय पूछा।

"मैं भारत का प्रधानमन्त्री हूँ" पं. नेहरू बोले। इस पर रोगी ने कहा, "ऐसा मत कहा करो। मैं भी यही कहता था तो ये मुझे पकड़कर यहाँ ले आये हैं।" महर्षि दयानन्द जी द्वारा स्थापित सभा के निर्माता श्री ला. लाजपतराय जी, महात्मा मुंशीराम, मास्टर आत्माराम, स्वामी स्वतन्त्रानन्द, नारायण स्वामी महाराज, पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु सभी नेता ऐसे-ऐसे कार्यों में शीश तली पर धरकर आगे बढ़े। इनसे सभा को ऊर्जा मिलती है। शहीद श्याम भाई भारत का एकमेव ऐसा नेता है जिसने एक दलित देवी का अपहरण करने वाले पापी के घर से उसे निकाला और जेल में डाले गये। लम्बा अभियोग चला। गांधी जी को भी ऐसे कष्ट सहन करने का सौभाग्य न मिला। सभा के पूर्व प्रधान डॉ. धर्मवीर इन्हीं श्याम भाई के नाती थे। आपके पिता श्री भीमसेन आर्य ऐसे-ऐसे कार्यों के करने में सदा आगे रहे। स्वामी सत्यप्रकाश जी विद्यार्थी-जीवन में वाल्मीकियों को पढ़ाते रहे। वर्तमान में सभा के अनुभवी सदस्यों की सेवाओं को ऐसी बातें करने वाले क्या जानें। सभा मन्त्री ऐसे-ऐसे कार्यों में सदा सोत्साह आगे रहे हैं। बात सोच-समझ कर कहनी चाहिये। अहंकार-पूजा की भी कोई सीमा होती है।

बातों से बात नहीं बनती- कुछ भाई घर-वापसी का, शुद्धि का शोर तो बहुत मचाते हैं, परन्तु अभी तक कोई पं. देवप्रकाश, पं. मेधातिथि, पं. शान्तिस्वरूप, मौलाना अब्दुल अज़ीज़, पं. सत्यदेव को तो खींचकर ला न सके। हैदराबाद के मौलाना हैदर शरीफ़ सरीखा विद्वान् आर्यसमाज ने ही तो खींचा। जाति-भेद मिटाये बिना हिन्दू-समाज की पाचन-शक्ति मन्द-अति मन्द ही रहेगी। यह कार्य श्रद्धानन्द स्वामी नामी ही कर सकता है।

केवल मुसलमानों के दोष गिनाने व अत्याचार बताने, सूफ़ियों ने ऐसे हेर-फेर से तबलीग़ की- इन चर्चाओं से अब कुछ भी बनने वाला नहीं। आर्यसमाज में हम बड़बोले वक्ताओं, प्रवक्ताओं, लेखकों व स्पीकरों को सुन-सुनकर ऊब गये हैं। विवाह के समय तो ये जातिवाद की कड़ियों से बाहर निकलने का साहस नहीं करते। एक विद्वान् पण्डित संन्यास लेकर भी स्वयं को गौड़ ब्राह्मण ही घोषित करता रहा।

जब एक-एक प्रदेश में सहस्रों हिन्दू युवक पं. लेखराम की तड़प से जाति-बन्धन तोड़कर एक साथ सामूहिक विवाह करेंगे तब छत्रपति शिवाजी, महर्षि दयानन्द के राष्ट्रवाद की जय-जयकार होगी। याद रखो! अन्धविश्वासों को पालने से, जाति को रोगमुक्त किये बिना धर्म-रक्षा, जाति-रक्षा नहीं होगी। पत्तों को पानी देने से क्या लाभ? जड़ को सींचो।

इतिहास-प्रदूषणं ऐसे होता है- इतिहास-प्रदूषण भी एक कला है। पं. भीमसेन जी विद्यालङ्कार उर्दू नहीं जानते थे। यह उनकी पत्नी व बच्चों ने हमें बताया। गोविन्दराम हासानन्द द्वारा प्रकाशित लाला लाजपतराय की आत्मकथा के प्रधान सम्पादक उन्हें लालाजी की उर्दू में लिखी आत्मकथा का अनुवादक लिखते हैं। पं. भगवद्दत्त जी श्री विश्वबन्धु के चेलों को वेदनिन्दक नास्तिक मानते थे, ऐसा लिखा है। एक कलाकार ने विश्वबन्धु के चेले प्रो. वेदव्यास को पं. भगवद्दत्त जी का मित्र लिखा है। आश्चर्य यह है कि मित्रों में वैद्य रामगोपाल जी, पं. बुद्धदेव जी, पं. परसराम जी, वैद्य गुरुदत्त जी और आचार्य उदयवीर का नाम नहीं दिया। बिना पढ़े, बिना जाने, बिना खोजे इतिहास गढ़ देते हैं।

'शुद्धि समाचार' दिल्ली के फ़रवरी मास के अंक दो के मुखपृष्ठ पर छपे एक आचार्य जी के 'राष्ट्र-निर्माता दयानन्द' को पढ़कर पूछा गया है कि आपने सम्पूर्ण जीवन-चरित्र में कहीं भी ब्र. रामानन्द को लिखे पत्र में स्वराज्य की चर्चा नहीं की। आचार्य जी ने इसमें यह नया प्रमाण दिया है। इस प्रश्न का क्या उत्तर दिया जाये। सम्पादक किसी भी विषय का अधिकारी विद्वान् न हो तो ऐसे कपोल-कल्पित लेख ही छपेंगे। इस लेख में एक नहीं कई मनगढ़न्त बातें भरी पड़ी हैं। ऋषि के पत्र-व्यवहार से कोई भी मिलान कर ले।

'स्वस्ति पन्था' मासिक के मार्च के अंक में पृष्ठ ३२ पर गंगा-जल से स्वर्ग-प्राप्ति की घोषणा पर पूछे गये प्रश्न का क्या उत्तर दिया जाये। सम्पादक जी तथा वानप्रस्थ-संन्यास आश्रम के महात्माओं को पोपलीला के लिये बधाई ही देनी चाहिये।

हैदराबाद में एक बुद्धिजीवी सम्मेलन हुआ। बुद्धिजीवी शब्द का प्रचलन भी एक फ़ैशन है। वहाँ बताते हैं कि राजस्थान से पधारे एक बुद्धिजीवी ने आर्यसमाज को भक्तसिंह का सपना साकार करने का प्रयास करने की आज्ञा दी। किसी ने भी वहाँ शूर-शिरोमणि श्याम भाई, वेद प्रकाश, धर्मप्रकाश तथा जीवित जलाये गये दक्षिण के धर्मवीरों, प्राणवीरों का स्मरण न किया। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, अभेदानन्द जी आदि सब को भूल गये। इसे नेतागिरि समझें अथवा इतिहास-प्रदूषण? ऐसे प्रश्न पाकर हम उनका क्या समाधान करें?

यज्ञ-योग ज्योति के जनवरी २०१७ का अंक हमें किसी ने सौंपते हुये पृष्ठ तीन पर 'देशभक्त स्वामी श्रद्धानन्द' लघु लेख अथवा टिप्पणी पढ़ने को कहा। डॉ. राज बुद्धिराजा ही इस पर कुछ कह सकती हैं। यह उन्हीं का लेख है। जलियाँवाला का हत्याकाण्ड तो वैशाखी के दिन की घटना है। इस लेख में इसे दिल्ली के चाँदनी चौक में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा संगीनों से सीना अड़ाने की घटना से पहले घटित घटना बताया गया है। इतिहास की घटनायें हमारी मनचाही इच्छा से आगे पीछे नहीं हो सकतीं। हम आर्य सामाजिक पत्रों के गिरते स्तर पर क्या कहें। जब लोभ के वशीभूत कोई महर्षि के जीवन-काल में उनके

सामने जोधपुर में आर्यसमाज की स्थापना की कहानी गढ़कर उसका साक्षी ऋषि को बना दे तो इससे बड़ा पाप क्या होगा? इस मनगढ़न्त कहानी को परोपकारिणी सभा के इतिहास में भी जोड़ दिया गया। कहाँ तक लिखें। आर्यसमाज में अप्रामाणिक लेखन का पाप रोकने वाले आगे आयें। हम इस अनर्थ को, पाप को कहाँ तक सहें?

अमरीका में परोपकारी की धूम- शिकागो के आर्यसमाज ने अपने वर्ष २०१६ के वार्षिक महासम्मेलन के अवसर पर एक सुन्दर स्मारिका का प्रकाशन किया है। इसकी एक प्रति प्रिय श्री रमेश मल्हन जी ने हमें भी भेजी है। इस सुन्दर स्मारिका को देखकर और एक विंहगम दृष्टि डालकर बहुत प्रसन्नता प्राप्त हुई। इसमें सुयोग्य, कर्मठ और अनुभवी समाज-सेवी, सच्चे मिशनरी प्रो. रमेश जी ने परोपकारी की सेवाओं की बहुत प्रशंसा की है। आर्यसमाज में इस पाक्षिक की लोकप्रियता को जानकर हृदय गदगद हो जाता है। प्रो. रमेश जी ने युवकों में परोपकारी की लोकप्रियता व गहरे प्रभाव की हृदयस्पर्शी शब्दों में चर्चा की है। आपने 'कुछ तड़प-कुछ झड़प' का विशेष उल्लेख किया है।

श्री रमेश मेरे विद्यार्थी रहे हैं। हम एक ही नगर के निवासी रहे हैं। आपसे पारिवारिक, धार्मिक व सामाजिक नाता बड़ा घनिष्ठ रहा है। आप बाल्यकाल से ही बहुत प्रेमल, हँसमुख व सेवाभावी हैं। यह गुण आपको बपौती में मिले हैं। इनके बाल्यकाल में हमने कभी यह सोचा भी नहीं था कि आगे चलकर एक सफल डॉक्टर का यह सुपुत्र, विज्ञान का प्रोफेसर एक अच्छा आर्यसमाजी ही नहीं बनेगा प्रत्युत् लेखराम नगर कादियाँ का यह सपूत, पं. लेखराम का चरणानुरागी एक सफल और आदर्श मिशनरी बनेगा। इनके आरम्भिक जीवन में जिला भर के स्कूलों में रमेश द्वय की धूम मची रहती थी। दोनों सफल वैदिक मिशनरी बने। सच तो यह है कि श्री रमेश मल्हन प्राचार्य रमेशचन्द्र जी जीवन से भी मिशनरी के रूप में आगे निकल गये हैं। इन पंक्तियों के लेखक को आर्यसमाज के इन दोनों सपूतों में पं. लेखराम के भव्य भाव भरने का अत्यन्त गौरव और सन्तोष प्राप्त है।

आर्यो! उठो! उठो!! उठो!!!- हम परोपकारी के कई अंकों में महाकवि दुर्गासहाय 'सरूर' जी पर लिख चुके हैं। हमारा आन्दोलन सफल होने जा रहा है। उर्दू साहित्य के इतिहास लेखक प्रायः मुसलमान भाई ही रहे। किसी ने सरूर जी को उनका समुचित स्थान नहीं दिया। अब कुछ-कुछ चर्चा कुछ पुस्तकों में होने लगी है। उनके काव्य का एक बड़ा संग्रह साहित्य अकादमी प्रकाशित करने जा रही है। हमारे द्वारा सम्पादित उनका एक संग्रह 'हृदय की तड़पन' प्रकाशनाधीन है। उर्दू साहित्य को नई दिशा देने वाले महान् देशभक्त आर्य दयानन्दी महाकवि दुर्गासहाय 'सरूर' को संसार जाने और माने, यही हमारी ललक और कामना रही है। क्या 'हृदय की तड़पन' के व्यापक प्रसार हेतु आर्य समाज आगे आयेगा?

आगामी ऋषि मेला
२७, २८, २९ अक्टूबर २०१७, शुक्र, शनि, रविवार
स्थान- ऋषि उद्यान, अजमेर

इस बात का निश्चय है कि ब्रह्मचर्य्य, उत्तम शिक्षा, विद्या, शरीर और आत्मा का बल, आरोग्य, पुरुषार्थ, ऐश्वर्य, सज्जनों का संग, आलस्य का त्याग, यम-नियम और उत्तम सहाय के विना किसी मनुष्य से गृहाश्रम धारा जा नहीं सकता।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.३१

राजा और प्रजाजन परस्पर सम्मति से समस्त राज्य व्यवहारों की पालना करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ६.२६

किष्किन्धा का वानर-राजवंश

आचार्य उदयवीर शास्त्री

आधुनिक 'कपिल' की उपाधि से विख्यात् आर्यसमाज के दार्शनिक विद्वान् आचार्य उदयवीर शास्त्री ने लेखन का अद्वितीय कार्य किया है। उनके लेख तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं में छपते रहे। उनकी पुस्तकें तो आज उपलब्ध हैं, परन्तु सर्वजनोपयोगी विषयों पर प्रकाशित उनके लेख आज जन सामान्य से अछूते ही हैं। उनके ज्ञान-सागर से प्राप्त कुछ मोतियों को परोपकारी लेखमाला के रूप में प्रकाशित कर रहा है। आशा है पाठक इससे लाभ उठायेंगे। **-सम्पादक**

रामायणी कथा के पात्रों का विवरण बड़ा अद्भुत व चमत्कार-पूर्ण है। पात्रों से हमारा अभिप्राय उन व्यक्तियों व प्राणियों से है, जिनके आधार पर यह समस्त वृत्त प्रस्तुत किया गया है। विवरण से आपातत: ऐसा प्रतीत होता है, कि इन कथावस्तु व वृत्त-वाहक प्राणियों में मानव, पशु-पक्षी सभी का समावेश है। कहीं तो जड़-वस्तु भी मानव-चेतन के रूप में प्रस्तुत होकर अपना अभिप्रेत कार्य-निर्वाह करती दृष्टिगोचर होती है। समुद्र लाँघते समय मैनाक पर्वत का ऊपर उभरकर हनुमान को आश्रय देना और उससे संक्षिप्त वार्त्तालाप करना इसी स्थिति का एक नमूना है।

जहाँ तक प्राणी-पात्रों का सम्बन्ध है, रामायणी कथा में मुख्य रूप से तीन राजवंश सामने आते हैं। वे तीन राजवंश अयोध्या, किष्किन्धा और श्रीलंका के हैं। इनके अतिरिक्त कुछ अन्य पात्र हैं जो अयोध्या से निकलकर श्रीलंका पहुँचने तक श्री राम के सम्पर्क में आये, अथवा अन्य मध्यगत प्रसंगवश जिनका उल्लेख हुआ है। इनमें अनेक आश्रमवासी ऋषियों, कतिपय शापग्रस्त व्यक्तियों, अनेक राक्षसों और जटायु-संपाति जैसे खग-वर्ग के प्राणियों का समावेश कहा जा सकता है।

इनमें वानर, रीछ जैसे वन्य पशु, जटायु सदृश पक्षी, अन्य राक्षस व ऋषि सब एक ही भाषा को बोलते-समझते और परस्पर सब अवसर के उपयोगी वार्त्तालाप करते वर्णित किये गये हैं। स्वयं राम इन सभी के सम्पर्क में आते हैं, पर भाषा सबकी एक ही प्रतीत होती है। कौन-सी भाषा वह रही होगी, यह कहना कठिन है, पर रामायण के वर्णनों से ऐसा संकेत मिलता है कि वह भाषा संस्कृत रही होगी। यह आश्चर्य की बात है कि उस समय के पशु-पक्षी भी संस्कृत भाषा बोलते व समझते थे। वह समय सत्-युग का तो नहीं, पर त्रेता का अवश्य था। इस प्रसङ्ग में कलियुग की एक उल्लिखित घटना का स्मरण हो आता है। जब मण्डन मिश्र के द्वार पर पिंजड़ों में बन्द तोता और मैना वेदों के स्वत: परत: प्रामाण्य और जगत् की नित्यता-अनित्यता पर चर्चा किया करते थे। पर यह कठिन है कि उनकी चर्चा में भाषा कौन-सी रहती थी। जब कलियुग में ऐसा होता रहा, तो त्रेता-युग की बात में अधिक सन्देह करने की गुञ्जाइश नहीं रह जाती।

विष्णु शर्मा रचित 'पञ्चतन्त्र' संस्कृत की एक प्रसिद्ध रचना है। इसकी समस्त वर्ण्य-वस्तु का निर्वाह पशु-पक्षी वर्ग के प्राणियों द्वारा किया गया है। निश्चित है, यह रचना केवल कल्पना पर आधारित है। एक विशिष्ट वर्ण्य-राजनीति का मनोरञ्जन की रीति से उपपादन करने का सफल प्रयास किया गया है। इसी के अनुसार रामायणी कथा के पात्रों पर दृष्टि डालने के फलस्वरूप आधुनिक पाश्चात्य लेखकों ने उसको कल्पनामूलक माना है। भारतीय समाज व राष्ट्र को जिस व्यक्तित्व पर गर्व है, जिसको पूर्ण रूप में अनुकरणीय माना जाता है, संस्कृत का लगभग आधा लौकिक साहित्य जिस पर अवलम्बित है, एक कल्पनातीत लम्बे काल के व्यतीत हो जाने पर भी आज भारतीय समाज जिससे अन्त:करण की गहराइयों तक प्रभावित है, वह राम और उसकी रामायणी कथा अपने चमत्कारपूर्ण वर्णनों के आधार पर एक कल्पना मात्र समझ ली गई है।

इस लघुकाय लेख में समस्त रामायण के ऐसे वर्णनों पर दृष्टि न डालते हुए केवल किष्किन्धा के वानर-राजवंश के विषय में दो-एक बातें कहना अभिप्रेत है। यद्यपि यह घन-वन का कण्टकाकीर्ण मार्ग है, फिर भी एक निर्धारित दिशा में यह प्रयत्न है। हिन्दी में आज जिसे 'बन्दर' कहते हैं, संस्कृत में उसके लिये 'वानर' पद है। संस्कृत में यह परम्परा अति प्राचीन काल से चली आ रही है कि कोई

'नाम' पद यदि किसी व्यक्ति का वाचक है उसके लिये भी लेखक पर्याय-पदों का प्रयोग बराबर करते रहते हैं। इस परम्परा से सभी संस्कृतज्ञ परिचित हैं। वानर-राजवंश के लिये भी रामायण में 'वानर' पद के प्राय: सभी पदों का निर्बाध प्रयोग हुआ है। जैसे-कपि, शाखामृग, प्लवग, प्लवङ्ग, मर्कट, कीश, बनौकस् आदि। न केवल आज प्रत्युत पर्याप्त पूर्व समय से भारतीय समाज में ऐसे वर्णनों के आधार पर यह धारणा रही है कि ये किष्किन्धा-निवासी आज जैसे बन्दर ही थे।

इस धारणा का मूल क्या होगा, यह कहना कठिन है। पर संभव है, पौराणिक भावनाओं का प्रभाव इसका मूल रहा हो। मेरा तात्पर्य पौराणिक कल्पनाओं को चुनौती देना नहीं है। यह एक सुझाव है और इसका कारण यह है कि यदि यह रामायण वाल्मीकि की रचना है और वाल्मीकि श्री राम के समकालिक हैं, उनका हनुमान और सुग्रीव आदि से साक्षात् परिचय रहा है, तथा अयोध्या के राजवंश का विवरण थोड़ा भी ऐतिहासिक लक्ष्य रखता है, तो यह किसी विचारशील व्यक्ति के लिये संभव प्रतीत नहीं होता कि वह यह समझे कि वाल्मीकि ने हनुमान आदि को वन्य पशु बन्दर समझकर वैसा वर्णन किया है। आपातत: वह वर्णन प्रतीत अवश्य ऐसा होता है, पर इसको उसी रूप में यदि तथ्य मान लिया जाय, तो यह कहने में कोई संकोच न होगा कि वाल्मीकि की रामायण कल्पनामूलक है, न वह श्रीराम के समय में हुआ और न उसका हनुमान आदि से सम्पर्क रहा, न इन घटनाओं का कभी अवसर आया। फलत: हनुमान आदि के 'बन्दर' समझे जाने की कल्पना पौराणिक-मूल से कही जा सकती है। हनुमान की बन्दर-सदृश मूर्तियों का उपलब्धि-काल कोई अधिक पुराना नहीं है।

कहा जा सकता है, वाल्मीकि ने किष्किन्धा के राजवंश का वर्णन उन्हें 'बन्दर' समझ कर नहीं किया। इस प्रकार सामूहिक रूप से बन्दरों का न नामकरण होता है, न उनकी वंश-परम्परा का उल्लेखन, न उनके विवाह और सम्बन्धियों का वर्णन, न उनकी पढ़ाई-लिखाई और राजशासन-व्यवस्था व मन्त्री-मण्डल आदि का विवरण, या तो इसे 'काकोलूकीयम्' समझिए, या इसकी तह में जाकर इसकी वास्तविकता को उजागर कीजिये। ये बातें स्पष्ट करती हैं कि वाल्मीकि ने किष्किन्धा के राजवंश को आज जैसा 'बन्दर' समझकर उसका विवरण नहीं दिया। कतिपय प्रसंगों का संकेत रामायण के अनुसार प्रस्तुत है-

वंश-परम्परा-

(१) वाल्मीकि-रामायण (बालकाण्ड, सर्ग १७) में वानर-वर्ग की उत्पत्ति का वर्णन करते हुए जिन व्यक्तियों व महिलाओं के वर्ग का उल्लेख किया गया है, वह (बन्दरों) में होना संभव नहीं। वहाँ विवाह व स्त्री-पुरुष के सम्बन्ध का उल्लेख मानव-समाज के समान किया है। उस प्रकार का सामाजिक वर्गों का विभाजन मानव-समाज में संभव है, अन्यत्र नहीं।

(२) किष्किन्धा काण्ड के नवम सर्ग में अपनी स्थिति के विषय में सुग्रीव कह रहा है- "मेरा बड़ा भाई शत्रुहन्ता प्रसिद्ध बाली है। हमारा पिता सदा उसको बहुत मानता रहा और मैं भी उसका आदर करता रहा हूँ। हमारे पिता के स्वर्गवासी हो जाने पर यह ज्येष्ठ पुत्र है- इस कारण मन्त्रियों ने वानरों के राज्य-सिंहासन पर प्रतिष्ठापूर्वक उसी को आसीन किया। हमारा यह महान् राज्य पितृ-पैतामह परम्परा से चला आया है। उस पर अब बड़ा भाई बाली शासन करता है। मैं अभी तक सदा प्रणत होकर उसकी आज्ञा में रहा हूँ।" ऐसे वर्णन में यदि थोड़ा भी ऐतिहासिक तथ्य है तो यह मानव-समाज में संभव है, 'समज' में नहीं। पितृ-पैतामह परम्परा से देश व राष्ट्र पर प्रशासन व मन्त्रिमण्डल की व्यवस्था होना तथा ज्येष्ठ पुत्र का राज्याधिकार-यह सब राजनीति-शास्त्र व धर्म-शास्त्र 'बन्दरों' के लिये नहीं हैं।

(३) सीता-अपहरण के अनन्तर जब राम-लक्ष्मण किष्किन्धा के समीप ऋष्यमूक पर्वत की उपत्यका में पहुँचते हैं, तब अपने बड़े भाई बाली के द्वारा सताये हुए सुग्रीव ने, जो उस समय ऋष्यमूक पर्वत में छिपकर अपने दिन बिता रहा था, हनुमान को राम-लक्ष्मण के पास भेजा, यह जाँचने के लिये कि ये कहीं बाली के भेजे कोई गुप्तचर न हों, जो हमें हानि पहुँचाने यहाँ आये हों।

हनुमान ब्राह्मण के वेश में उनके पास पहुँचता है। पर्याप्त समय के वार्त्तालाप के अनन्तर राम ने लक्ष्मण से

एक ओर होकर कहा, यह व्यक्ति हनुमान वानरराज सुग्रीव का सचिव है, तुम इसके साथ स्नेहयुक्त मधुर वाणी से बात-चीत कर लो। यह वेदवित् है, बिना ऋग्-यजुः-सामवेदों को जाने ऐसा भाषण संभव नहीं, जो इसने किया है। यह व्याकरण-शास्त्र का पूर्ण ज्ञाता प्रतीत होता है। इतनी देर तक वार्त्तालाप करते हुए एक भी अशुद्ध शब्द का इसने उच्चारण नहीं किया। इसके मुख, नेत्र, ललाट, भौं तथा अन्य अंगों पर कोई विकृति प्रतीत नहीं हो रही।

हनुमान के विषय में राम द्वारा प्रस्तुत किया गया यह विवरण किसी 'बन्दर' का होना असंभव है। ब्राह्मण या भिक्षु वेश में जाने का अभिप्राय यही हो सकता है कि उस समय हनुमान् ने अपनी जातीय वेश-भूषा व पहनावे को छोड़कर वह उत्तरदेशीय राम के सामाजिक पहनावे में गया। इसके अतिरिक्त वेद व व्याकरण आदि का ज्ञाता होना, समयोचित नीतिपूर्ण वार्त्तालाप करना एक वन्य-पशु 'बन्दर' के लिये असंभव है। (रामायण, ४,३)।

(४) हनुमान श्रीलंका में जब सीता की खोज में इधर-उधर घूम रहा है, वहाँ किसी व्यक्ति ने उसे विदेशी समझकर नहीं टोका। वहाँ वह उस समय की लंका में प्रचलित-वेश-भूषा में ही गया। वह अनेक स्थलों पर वहाँ के निवासियों से बातचीत भी करता है। इससे स्पष्ट होता है, उसने उस समय लंका निवासियों की भाषा का ही प्रयोग किया। अन्यथा उसे विदेशी समझकर निश्चित ही उस पर सन्देह किया जाता। उसकी मुखाकृति और देह की बनावट की वैसी ही संभावना की जा सकती है, जैसी समान रूप से उत्तर भारत व लंका के निवासियों की रही होगी।

लिखने को बहुत बातें हैं, पर संकेत मात्र में इतना पर्याप्त है। इसके फलस्वरूप ज्ञात होता है, किष्किन्धा का वानर-राजवंश ऐसा ही एक मानव-समाज वर्ग था, जो अन्य भारतीय समाज के समान था। उस वर्ग का 'वानर' नाम क्यों हुआ? यह अतिरिक्त खोज का विषय है। महाभारत के 'नाग-सत्र' के 'नाग' सांप न थे, वे हमारे ही समाज का एक अंग हैं, जो आज भी भारत के अनेक भागों में विद्यमान हैं। मेरे लाहौर रहते समय 'ट्रिब्यून' के सम्पादक कालिदास नाग थे। उन्हें साँप कैसे मान लूँ? ऐसा ही 'वानर' पद है।

कण-कण में जिसका वास है

पूजा करें उस ईश की, कण-कण में जिसका वास है।
है जग-नियन्ता एक वह, रहता जो सबके पास है।।

द्रष्टा है वह, स्रष्टा है वह, गुणियों का यह विश्वास है।
आज्ञा न उसकी पालना, फिर तो सुनिश्चित नाश है।।

कल्याण पथ बस है यही, यह बोलता इतिहास है।
सुखधाम से सुख पायेगा, जिसने लगाई आस है।।

सर्वज्ञ सर्वाधार वह, जो दूर फिर भी पास है।
खाता नहीं, पीता नहीं, लेता कभी न श्वास है।।

सब दोष दुर्गुण त्याग कर, अपना विमल जीवन करें।
सत्कर्म बिन संसार में, न चैन न उल्लास है।।

बिन लक्ष्य के मानव सदा, रहता हताश निराश है।
सपनों में खोये रहना तो, मन का अरे विलास है।।

प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

अतिथि-यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि-यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगाँठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय **जन्मतिथि/वैवाहिक वर्षगाँठ आदि व दूरभाष संख्या** सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नकद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष-साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़कर ये प्रवचन नि:शुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष-ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिखकर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें, अन्यथा शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उन पर '**परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया, राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA AJMER)

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावर हाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

विद्वान् स्त्रियों को योग्य है कि अच्छी परीक्षा किए हुए पदार्थ को जैसे आप खायें वैसे ही अपने पति को भी खिलावें कि जिससे बुद्धि, बल और विद्या की वृद्धि हो और धनादि पदार्थों को भी बढ़ाती रहें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४२

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

आर्य समाज सृष्टिक्रम विज्ञान के अनुसार ईश्वर और वैदिक धर्म को मानता है।
(कुछ ईश्वरीय विज्ञान के प्रमाण)

-पं. उम्मेदसिंह विशारद

ईश्वर की कृपा से संसार का कल्याण करने हेतु भारत-भूमि में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्म हुआ। महाभारत काल के बाद भारतवर्ष की जनता सत्य ईश्वरीय-ज्ञान, सत्य अध्यात्म ज्ञान-विज्ञान, सत्य सामाजिक-ज्ञान के अभाव में घोर अन्धकार में भटक रही थी। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सर्वप्रथम वेदों के रुढ़ि अर्थों को शुद्ध कर ईश्वर-परक अर्थ किये तथा ईश्वरीय-ज्ञान, सृष्टिक्रम-विज्ञान का प्रचार किया तथा एक ऋत-सत्य का संगठन आर्य समाज खोलकर सदैव के लिये ज्ञान-विज्ञान का मार्गदर्शक केन्द्र खोला, यह बड़ा चमत्कार था, इस सृष्टि में सर्वोच्च बृहत् कार्य था। संसार के बड़े-बड़े विद्वान् विचारक इस सत्य के प्रचार में पीछे रह गये थे। आज हम संक्षेप में आर्य समाज की मान्यताओं के ऋत ज्ञान-विज्ञान पर चर्चा करते हैं।

ईश्वर का वैज्ञानिक स्वरूप

ईश्वर के मतवादियों ने उसे मानव सरीखा कल्पित कर लिया है, ईश्वर को पुरुष जैसा मान लिया है। योग दर्शन में भी ईश्वर को, **क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुष-विशेष ईश्वरः**, कहा है, परन्तु यह मानवत्वारोपण नहीं है, क्योंकि यहाँ लौकिक भाषा का प्रयोग करके उसके अलौकिक रूप का वर्णन किया गया है। यह कहा है कि पुरुष तो क्लेशादि से परामृष्ट होता है पर वह ऐसा पुरुष है जो क्लेशादि से अपरामृष्ट है। इसका अर्थ यह नहीं कि वह पुरुष है इसका अर्थ है वह पुरुष से विशेष है। श्वेताश्वतर उपनिषद् का वचन है कि उसके न हाथ हैं, न पांव हैं, बिना हाथों के पकड़ता, बिना पाँवों के गति करता है, उसके न आँख हैं न कान हैं, वह बिना आँखों के देखता, बिना कानों के सुनता है। वैदिक दृष्टिकोण यह है कि ईश्वर कोई व्यक्ति नहीं, शक्ति है, परन्तु वह शक्ति प्रकृति की विद्युत आदि की तरह अचेतन शक्ति नहीं, ईश्वर चेतन-शक्ति है।

ईश्वर-सिद्धि में अनेक वैज्ञानिक युक्तियाँ हैं, जैसे सृष्टि में सृजनात्मक चेतन-शक्ति का होना, सृष्टिक्रम का नियमबद्ध होना, सृष्टि में विशालता का होना, सृष्टि में प्रयोजन अथवा उद्देश्य का होना, सृष्टि की विविधता में एकसूत्रता का होना, सृष्टि के अस्थायित्व में स्थायित्व का होना। ये सब लक्षण जड़-जगत्, वनस्पति-जगत् तथा प्राणी-जगत् में सर्वत्र पाये जाते हैं, जिनके आधार पर निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि विश्व-जगत् चेतन-शक्ति से चल रहा है।

ईश्वर की सत्ता में निरतिशयता का प्रमाण

विकास-सिद्धान्त के अनुसार हर वस्तु की छोटी से छोटी तथा बड़ी से बड़ी सीमा होनी चाहिए। प्रकृति में छोटे से छोटा परिमाण 'परमाणु' का है, बड़े से बड़ा परिमाण 'आकाश' अन्तराल का है। ज्ञान में व शक्ति में जो बड़े से बड़ा है, वही ईश्वर है। वह ईश्वर गुरुओं का गुरु है, ज्ञान का आदि स्रोत है, क्योंकि काल की कोई सीमा नहीं होती। काल से काल के पीछे-पीछे जाते हुए ज्ञान का जो आदि स्रोत है वही ईश्वर है। इस ब्रह्माण्ड की रचना इतनी विचित्र और विस्तृत तथा सुव्यवस्थित है कि साधारण मनुष्य की बुद्धि वहाँ तक नहीं पहुँच सकती है। सृष्टि के एक-एक कण से लेकर विशाल सृष्टि-रचना की विविधता का नियमानुसार, संचालन किसी अपार शक्ति द्वारा हो रहा है, जो संचालन कर रहा है उसी का नाम ईश्वर है ('वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार' लेखक- डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालकांर ग्रन्थ से)।

सृष्टि का संविधान- ईश्वर सृष्टि का रचयिता है और सम्पूर्ण प्राणी-जगत् व जड़-जगत् के संचालन का संविधान भी उसी ने बनाया है। सृष्टि एक राज्य है और वेद उसका संविधान है। वेद-विज्ञान के बिना सृष्टि के उद्देश्यों की व्यवस्था भंग हो जायेगी। वेद ईश्वरीय राज्य-व्यवस्था का संविधान है। वेद-विज्ञान के अनुसार सृष्टिक्रम चल रहा है।

वेदों की उत्पत्ति का काल- एक अरब छियानवें करोड़ आठ लाख तिरेपन हजार एक सौ सत्रह वर्ष है-

अर्थात् सृष्टि-उत्पत्ति से ही वेद-ज्ञान ईश्वर द्वारा ऋषियों की आत्माओं में दिया गया और वह क्रमश: पीढ़ी दर पीढ़ी आगे-आगे चलता गया। महाभारत काल तक केवल वैदिक-धर्म की ही मान्यता थी। महाभारत काल के पश्चात् वैदिक विद्वानों के न होने से अनेक मत-मतान्तरों की उत्पत्ति हुई और विभिन्न सम्प्रदायों को धर्म का नाम दे दिया गया।

वैदिक सत्य सनातन धर्म- सृष्टि-उत्पत्ति के प्रारम्भ में जो ज्ञान ईश्वर द्वारा ऋषियों की आत्मा में दिया गया था, वही सत्य और निर्विवाद ईश्वरीय धर्म है जिससे सृष्टिक्रम संचालित हो रहा है, वही सत्य और मान्य धर्म है। इसकी आयु लगभग पौने दो अरब वर्ष हो गयी है। इसकी धर्म-पुस्तक का नाम वेद है।

सनातन धर्म- महाभारत काल से कुछ वर्ष पूर्व तक केवल वैदिक सत्य सनातन धर्म की मान्यता थी, कालान्तर में वेद के ऋत-ज्ञान के विद्वानों के न होने के कारण और वर्ण-संकरता के कारण चतुर लोगों ने अपने-अपने मत उत्पन्न करके वेदों की और वैदिक ग्रन्थों की जगह पौराणिक, सृष्टिक्रम-विरुद्ध काल्पनिक ग्रन्थों की रचना करके उसका नाम सनातन-धर्म रख दिया और जनता को वेदों के अर्थों के अनर्थ करके परोस दिये और भारत की जनता में भिन्न-भिन्न मतों का प्रचलन करके एक विवाद खड़ा कर दिया, जो अभी भी चल रहा है। तथाकथित सनातन-धर्म की आयु लगभग साढ़े पाँच हजार वर्ष पुरानी है। सनातन धर्म के ग्रन्थों का नाम पुराण है, इसके अन्दर बौद्ध, जैन, सिख व अनेक मत-मतान्तर आ गये हैं।

पारसी धर्म- इसके ग्रन्थ का नाम जेन्दावस्ता है, और इसके रचयिता जरथुष्ट्रजी है, जिसका काल ईसा से ७०० वर्ष पूर्व है। ३५०० वर्ष करीब इसकी आयु है।

ईसाई धर्म- इसके ग्रन्थ का नाम बाइबिल है, इसके रचयिता इब्राहिम और ईसामसीह हैं, इसकी अवस्था २५०० वर्ष लगभग है।

मुस्लिम धर्म- इसके ग्रन्थ का नाम कुरान है, जिसके रचयिता हजरत मुहम्मद हैं, जिसकी आयु लगभग १५०० वर्ष है।

भारतीय दृष्टिकोण में वेद अनादि हैं। वैदिक विद्वानों ने सृष्टि के प्रारम्भ से ही वेदों की उत्पत्ति को माना है, क्योंकि वेदों में कोई इतिहास नहीं है। क्योंकि इतिहास घटना के बाद बनता है। उक्त प्रमाणों से सिद्ध हुआ कि केवल वेद अनादि हैं, जैसे सृष्टि की उत्पत्ति, फिर प्रलय, फिर उत्पत्ति अनादि है, वैसे वेद भी अनादि हैं और वैदिक धर्म ही सृष्टिक्रम व विज्ञान की कसौटी पर सही उतरता है।

जो भी मानव सृष्टिक्रम व विज्ञान के अनुसार धर्म को मानते हैं वे आर्यसमाज के अन्तर्गत आते हैं। महर्षि देव दयानन्द जी ने सृष्टिक्रम, विज्ञान-सम्मत ज्ञान को प्रसारित करने हेतु वैज्ञानिक विचारधारा के आर्यसमाज का गठन करके संसार का कल्याण किया है। अत: इस लेख द्वारा मानव जगत् से निवेदन करता हूँ कि हम सभी को ईश्वर और धर्म तथा सामाजिक मान्यताओं को सृष्टिक्रम, विज्ञान की कसौटी पर परखकर ही मानना और जानना चाहिए, तभी चहुँ ओर सुख-शान्ति हो सकेगी।

वैदिक पुस्तकालय, अजमेर की पुस्तकों की राशि ऑनलाइन जमा कराने हेतु

बैंक का नाम - **पंजाब नेशनल बैंक, कचहरी रोड, अजमेर।**

बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - **0008000100067176**

IFSC - PUNB0000800

ईश्वर का आश्रय न करके कोई भी मनुष्य प्रजा की रक्षा नहीं कर सकता। जैसे ईश्वर सनातन न्याय का आश्रय करके सब जीवों को सुख देता है, वैसे ही राजा को भी चाहिये कि प्रजा को अपनी न्याय-व्यवस्था से सुख देवे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.३९

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में वर्ष २०१२ से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ नि:शुल्क दी जाती हैं। डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA AJMER)

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आई**, पावर हाउस के सामने,

जयपुर रोड, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**091104000057530**

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनां 'आस्था-भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर जी** के वेद-प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ् जी** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित् जी** के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकॉन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

सृष्टि विवेचनम्

-शिवदेव आर्य

पर्व मनाने की परम्परा में नववर्ष का पर्व विशेष महत्त्व रखता है, क्योंकि सृष्टि की उत्पत्ति चैत्र मास शुक्ला प्रतिपदा को स्वीकार की जाती है।

चैत्रे मासि जगद् ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि।
शुक्लपक्षे समग्रे तु तदा सूर्योदये सति।।

सृष्टि किसे कहते हैं इस विषय में स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज आर्योद्देश्यरत्नमाला में कहते हैं कि ''जो कर्त्ता की रचना से कारण द्रव्य किसी संयोग विशेष से अनेक प्रकार कार्यरूप होकर वर्तमान में व्यवहार करने योग्य होती है, वह सृष्टि कहाती है।'' इसी बात को वह स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश में कहते हैं कि ''सृष्टि उसको कहते हैं जो पृथक्द्रव्यों को ज्ञान, युक्तिपूर्वक मेल होकर नानारूप बनना।''

हम सभी इस सिद्धान्त से अवगत हैं कि किसी भी वस्तु का निर्माणकर्त्ता अवश्य होता है। निर्माणकर्त्ता पहले होता है और निर्मित वस्तु पश्चात् होती है। परमेश्वर सृष्टिकर्त्ता है और उसने जीवों के कल्याण के लिए यह सृष्टि बनायी। सृष्टि के सृजन से पूर्व मूल प्रकृति सत्व-रज-तम की साम्यावस्था में होती है।

सत्यार्थप्रकाश में स्वामी दयानन्द सरस्वती जी कहते हैं कि अनादि-नित्य-स्वरूप सत्त्व, रजस् और तमो गुण की एकावस्थारूप प्रकृति से उत्पन्न जो परम सूक्ष्म-पृथक्-पृथक् तत्वावयव विद्यमान हैं, उन्हीं का प्रथम ही जो संयोग का प्रारम्भ है, संयोग विशेषों से अवस्थान्तर दूसरी इसकी अवस्था को सूक्ष्म से स्थूल, स्थूल से बनते-बनते विविधरूप बनी है, इसी से संसर्ग होने से सृष्टि कहाती है।

इयं विसृष्टिर्यत आबभूव यदि वा दधे यदि वा न।
यो अस्याध्यक्षः परमे व्योमन्त्सो अंग वेद यदि वा न वेद।।

ऋग्वेद-१-१२९-७

इस ऋग्वेदीय मन्त्र के आधार पर कहा गया है कि जिस परमेश्वर के द्वारा रचने से यह जो नाना प्रकार का जगत् उत्पन्न हुआ है, वही इस जगत् का धारणकर्त्ता, संहर्ता व स्वामी है।

अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यैरसाच्च विश्वकर्मणः समावर्त्तताग्रे।
अस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे।।

-यजु-३१-१७

तेन पुरुषेण पृथिव्यै पृथिव्युत्त्पत्यर्थमद्भ्यो रसः संभृतः संगृह्य तेन पृथिवी रचिता। एवमग्निरसेनाग्नेः सकाशादाप उत्पादिताः। अग्निश्च वायोः सकाशाद्वायुराकाशादुत्पादित आकाशः प्रकृतेः प्रकृति स्वसामर्थ्याच्च। विश्वं सर्वं कर्म क्रियमाणमस्य स विश्वकर्मा, तस्य परमेश्वरस्य सामर्थ्यमध्ये कारणाख्येग्रे सृष्टेः प्राग्जगत् समवर्त्तत वर्त्तमानमासीत्। तदानीं सर्वमिदं जगद् कारणभूतमेव नेदृशमिति। तस्य सामर्थ्यस्यांशान् गृहीत्वा त्वष्टा रचनकर्तेदं सकलं जगद्विदधत्।

- ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, सृष्टिविद्याविषयः।

अर्थात् परमपिता परमेश्वर ने पृथिवी की उत्पत्ति के लिए जल से सारांश रस को ग्रहण करके, पृथिवी और अग्नि के परमाणुओं को मिला के पृथिवी रची है। इसी प्रकार अग्नि के परमाणु के साथ जल के परमाणुओं को मिलाकर जल को रचा एवं वायु के परमाणुओं के साथ अग्नि के परमाणुओं से वायु रचा है। वैसे ही अपने सामर्थ्य से आकाश को भी रचा है, जो कि सब तत्त्वों के ठहरने का स्थान है। इस प्रकार परमपिता परमेश्वर ने सूर्य से लेकर पृथ्वीपर्यन्त सम्पूर्ण जगत् को रचा है।

सृष्टि उत्पत्ति विषय को अंगीकार कर ऋग्वेद में इसका निरूपण इस प्रकार किया गया है कि-

ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः।।
समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी।।

अर्थात् प्रदीप्त आत्मिक तप के तेज से ऋत और सत्य नामक सार्वकालिक और सार्वभौमिक नियमों का प्रथम प्रादुर्भाव हुआ। तत्पश्चात् प्रलय की रात्रि हो गई। किन्हीं भाष्यकार के मत से यहाँ रात्रि शब्द अहोरात्र का

उपलक्षण है और वे उससे प्रलय का ग्रहण न करके इसी कल्प की आदि सृष्टि के ऋतुओं सत्य के अनन्तर अहोरात्र का आविर्भाव मानते हैं। फिर मूल प्रकृति में विकृति होकर उसके अन्तरिक्षस्थ समुद्र के प्रकट होने (उसके क्षुब्ध होने) के पश्चात् विश्व के वशीकर्त्ता विश्वेश्वर ने अहोरात्रों को करते हुए संवत्सर को जन्म दिया। इससे ज्ञात होता है कि-आदि सृष्टि में प्रथम सूर्योदय के समय भी संवत्सर और अहोरात्रों की कल्पना परब्रह्म के अनन्त ज्ञान में विद्यमान थी। उनके जन्म देने का यहाँ यही अभिप्राय प्रतीत होता है कि वेदोपदेश द्वारा इस संवत्सरारम्भ और उसका ज्ञान सर्वप्रथम मन्त्र-द्रष्टा ऋषियों को हुआ वा यों कहिये कि-प्रत्येक सृष्टिकल्प के आदि में यथानियम होता है और उन्होंने यह जान लिया कि इतने अहोरात्रों के पश्चात् आज के दिन नवसंवत्सर के आरम्भ का नियम है और उसी के अनुसार प्रतिवर्ष संवत्सरारम्भ होकर वर्ष, मास और अहोरात्र की कालगणना संसार में प्रचलित हुई।

भारतीय संवत् के मासों के नाम आकाशीय नक्षत्रों के उदयास्त से सम्बन्ध रखते हैं। यही बात तिथि अंश (दिनांक) के सम्बन्ध में भी है। वे भी सूर्य-चन्द्र की गति पर आश्रित हैं। विक्रम-संवत् अपने अंग-उपांगों के साथ पूर्णत: वैज्ञानिक सत्य पर स्थित है। विक्रम-संवत् विक्रमादित्य के बाद से प्रचलित हुआ । विक्रम-संवत् सूर्य सिद्धान्त पर आधारित है। वेद-वेदांग मर्मज्ञों के अनुसार सूर्य सिद्धान्त का मान ही सदैव भ्रमहीन एवं सर्वश्रेष्ठ है। सृष्टि संवत् के प्रारम्भ से लेकर आज तक की गणनाएँ की जाएं तो सूर्य-सिद्धान्त के अनुसार एक भी दिवस का अन्तर नहीं होगा। सौर मंडल के ग्रहों, नक्षत्रों आदि की गति एवं स्थिति पर हमारे दिन, महीने और वर्ष आधारित हैं।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी सत्यार्थप्रकाश के अष्टम समुल्लास में कहते हैं कि-''आदि सृष्टि मैथुनी नहीं होती, क्योंकि जब स्त्री-पुरुष के शरीर परमात्मा बनाकर उनमें जीवों का संयोग कर देता है, तदनन्तर मैथुनी सृष्टि चलती है।''

सृष्टि और प्रलय को शास्त्रों में ब्राह्मदिन-ब्राह्मरात्रि के नाम से जाना जाता है, ये दिन-रात के समान निरन्तर अनादि काल से चल रहे हैं। सृष्टि और प्रलय का समय बराबर माना है, इसमें कोई विवाद नहीं है। इसी प्रक्रिया को स्वामी जी कुछ इस प्रकार परिभाषित करते हैं कि-जैसे दिन के पूर्व रात और रात के पूर्व दिन तथा दिन के पीछे रात और रात के पीछे दिन बराबर चला आता है, इसी प्रकार सृष्टि के पूर्व प्रलय और प्रलय के पूर्व सृष्टि तथा सृष्टि के पीछे प्रलय और प्रलय के आगे सृष्टि अनादि काल से चक्र चला आता है। इसका आदि वा अन्त नहीं, किन्तु जैसे दिन वा रात का आरम्भ और अन्त देखने में आता है, उसी प्रकार सृष्टि और प्रलय का आदि-अन्त होता रहता है। क्योंकि जैसे परमात्मा, जीव, जगत् का कारण तीन स्वरूप से अनादि हैं, जैसे जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और वर्तमान प्रवाह से अनादि है, जैसे नदी का प्रवाह वैसा ही दीखता है, कभी सूख जाता है, कभी नहीं दीखता, फिर बरसात में दीखता और उष्णकाल में नहीं दीखता, ऐसे व्यवहारों को प्रवाहरूप जानना चाहिए, जैसे परमेश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव अनादि हैं, वैसे ही उसके जगत् की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय करना भी अनादि है जैसे कभी ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव का आरम्भ और अन्त नहीं, इसी प्रकार उसके कर्त्तव्य कर्मों का भी आरम्भ और अन्त नहीं।

परमपिता परमेश्वर ने सृष्टि का निर्माण व इसको नियमित रूप से चलाये रखा है। उस परमेश्वर को जानने वाले हम लोग होवें। इसीलिए वेद हमें बार-बार उपदेश देता है कि-

हिरण्यगर्भ: समवर्त्तताग्रे भूतस्य जात: पतिरेक आसीत्।
सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

-ऋग्वेद १०/१२१/१

अर्थात् हिरण्यगर्भ जो परमेश्वर है, वही इस सृष्टि के पहिले वर्तमान था, जो इस सब जगत् का स्वामी है और वही पृथिवी से लेकर सूर्यपर्यन्त सब जगत् को रच के धारण कर रहा है। इसलिए उसी सुखस्वरूप परमेश्वर देव की ही हम लोग उपासना करें, अन्य की नहीं।

मनुष्यों को चाहिये कि सदा यज्ञ का आरम्भ और समाप्ति को करें और संसार के जीव को अत्यन्त सुख पहुँचावें। **-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६२**

पुस्तक - समीक्षा

पुस्तक का नाम- शंका-समाधान
लेखक- पं. रामचन्द्र देहलवी
प्रकाशक- विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द
पृष्ठ- ३२ **मूल्य**- ८.००रु.

पं. रामचन्द्र देहलवी जी का नाम आते ही उस शास्त्रार्थ-परम्परा का स्मरण हो उठता है जिसकी नींव आचार्य दयानन्द ने रखी थी। जिसके कारण पं. लेखराम जी जैसे शहीद हुये। जिसने अनेक महारथियों को जन्म दिया। जिनका नाम मात्र स्मरण करके ही प्रत्येक आर्य स्वयं को रोमांचित अनुभव करता है। एक पीड़ा-सी जग उठती है। हृदय विह्वल हो जाता है और आँखें अश्रुपूर्ण। कि हाय! अब वो परम्परा कहाँ?

यह पुस्तक भी ऐसे ही एक महारथी के वचनों का संग्रह है। पुस्तक को अगर शाब्दिक तौर पर पढ़ा जाये तो शायद कुछ प्रश्नोत्तरों के अतिरिक्त और कुछ भी न प्राप्त हो। लेकिन अगर दार्शनिकता देखी जाय तो यह पुस्तक बुद्धि के कपाट खोलने में पूर्णत: समर्थ है। पुस्तक का नाम भी शंका-समाधान है और शैली भी।

विचारणीय है कि आधुनिक धर्म श्रद्धा का पर्याय बना बैठा है और श्रद्धा अधर्म की पर्याय बनी बैठी है। इसलिये धर्म और अधर्म में कोई अन्तर नहीं दिखता। एक जिज्ञासा ही है जो इस श्रद्धा के विरोध में खड़ी हो सकती है और धर्म को धर्म के दायरे में ला सकती है और उस 'जिज्ञासा' का प्रथम सोपान 'शंका' होती है। इस तथ्य को सर्वप्रथम ऋषि दयानन्द ने प्रस्तुत किया। उनका मानना था कि धर्म उसी को कहते हैं जो तर्क की कसौटी पर कसा जा सके। इसलिये हमारा मानना है कि श्रद्धालु कभी धार्मिक नहीं हो सकता। अपितु जिज्ञासु ही सच्चा धार्मिक हो सकता है। क्योंकि तथाकथित श्रद्धा हमें तर्क करने का आदेश नहीं देती। हमारी बात कुछ अटपटी लग सकती है, क्योंकि श्रद्धा के प्रति अश्रद्धा कर पाना सामान्यत: सरल नहीं है। 'श्रद्धा' से हमारा अभिप्राय उसकी रुढ़िवादिता से है। वस्तुत: तो श्रद्धा सत्य के धारण को कहते हैं और सत्य तक पहुँचने का मार्ग है शंका। शंका ही वह प्रथम सोपान है जो मनुष्य को सच्चे अर्थों में श्रद्धालु बनाती है। इस दर्शन को ध्यान में रखते हुऐ पं. देहलवी जी ने इन प्रश्नोत्तर रुपी व्याख्यानों को दिया है। ये व्याख्यान जिज्ञासुओं का मार्ग प्रशस्त करेंगे।

सोमेश पाठक

विशेष सूचना

परोपकारी-पत्रिका के सभी पाठकों एवं आर्यजनों से निवेदन है कि डॉ. धर्मवीर जी से सम्बन्धित कोई पत्र, चित्र, ऑडियो, वीडियो आदि आपके पास हों तो कृपया हमें सूचित करें।

डॉ. धर्मवीर जी के जीवन पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका के लिए जिन भी महानुभावों के पास उनसे सम्बन्धित कोई भी संस्मरण, विचार या कविता आदि हों, वे भी अतिशीघ्र सभा को भेजने का कष्ट करें, ताकि आपके लेख स्मारिका में प्रकाशित किये जा सकें।

सम्पर्क सूत्र- ०९४६०४२११८३, ०१४५-२४६०१६४
ई-मेल-psabhaa@gmail.com
मन्त्री, परोपकारिणी सभा, दयानन्द आश्रम, केसरगंज,
अजमेर-३०५००१ (राज.)

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एकमात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ- प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***- आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***- अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्णरूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***- गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***- वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***- इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोधकर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***- योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों में भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युक्त पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि लगभग पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाखे जलाकर व्यय करते हैं, असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थित होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(०१ से १५ मई २०१७ तक)

१. श्री किशोर काबरा, ऋषि उद्यान, अजमेर २. श्री लक्ष्मणप्रसाद त्रिवेदी, जूनागढ़ ३. दीपा कोरानी, अजमेर ४. श्री देवमुनि, अजमेर ५. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर ६. इंजी. करण सिंह, मुजफ्फरनगर ७. श्री अमरेश त्यागी, अजमेर ८. सुश्री राजबाला, रोहतक ९. श्री रामचन्द्र, लाडनूं १०. श्री सुभाष मित्तल, बरनाला ११. श्री आनन्दीलाल जी ताराचन्दजी अग्रवाल, पाली १२. श्री सीताराम, मेरठ १३. माता कौशल्या, बीकानेर १४. श्री विनेश गुप्ता, बीकानेर १५. श्री घनश्याम पुरोहित, पीपाड़ शहर १६. श्री हेमन्त मुनि, नीमच १७. श्री बजरंगलाल, अजमेर १८. श्री कौशलेन्द्र सिंह राठौड़, अजमेर १९. श्रीमती सुनीता वासुदेव ठक्कर, दीसा २०. श्री विनय कुमार झा, जयपुर २१. आचार्य धर्मवीर, बदायूँ २२. श्री ब्रजभूषण गुप्ता, पंचकुला २३. श्रीमती निशि गुप्ता, अम्बाला कैन्ट २४. श्री ऋषभ गुप्ता, अम्बाला कैन्ट २५. श्री एम.एल. गोयल, अजमेर २६. श्री ओमप्रकाश झँवर, ब्यावर २७. श्री सुरेन्द्र मोहन विकल, लुधियाना २८. श्री नन्दकिशोर सोनी, अजमेर २९. श्री राजेश कुमार मिश्रा, अजमेर ३०. श्री संजीव बंसल, इंग्लैण्ड ३१. स्वामी देवेन्द्रानन्द, अजमेर ३२. श्री राहुल कुमार, ज्वालापुर ३३. श्री आशीष शर्मा, अजमेर ३४. माताजी, अजमेर ३५. डॉ. रमेश मुनि, ऋषि उद्यान, अजमेर ३६. श्री विजयसिंह गहलोत व श्रीमती कंचन गहलोत, अजमेर ३७. श्री लक्ष्मण आर्य मुनि, अजमेर ३८. श्री सुरेन्द्र आर्य, यमुनानगर ३९. श्री बलेश्वर मुनि, नई दिल्ली।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि-उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला की गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में निःशुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि-उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(०१ से १५ मई २०१७ तक)

१. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर २. श्री राजेश त्यागी, अजमेर ३. श्री रामचन्द्र सैनी, सीकर ४. श्री करमचन्द, कैथल ५. श्री राजेश आर्य, चंडीगढ़ ६. श्रीमती पुष्पलता उपाध्याय, अजमेर ७. श्री घनश्याम पुरोहित, पीपाड़ शहर ८. श्री विनय कुमार झा, जयपुर ९. श्री सी.एल. भण्डारी, मुम्बई १०. श्रीमती रामेश्वरी देवी, जयपुर ११. मै. ड्रीम अचीवर्स सोसाइटी, अजमेर १२. श्री दुर्गाशंकर कृष्ण कन्हैया चेरिटेबिल ट्रस्ट, अजमेर १३. श्रीमती वसुधा, दिल्ली १४. श्रीमती कान्ता अग्रवाल, अजमेर १५. श्रीमती ओमवती पारीक, अजमेर १६. डॉ. रमेश मुनि व श्रीमती उषा आर्या, अजमेर १७. श्रीमती मीना वेदी व श्री जितेन्द्र वेदी, अजमेर १८. श्री विजय सिंह गहलोत व श्रीमती कंचन गहलोत, अजमेर १९. श्री सुनीत आर्य, नवीन आर्य व विपिन आर्य, सहारनपुर २०. श्री लक्ष्मण आर्यमुनि, अजमेर २१. श्रीमती पुष्पा क्षेत्रपाल, अजमेर २२. स्वामी देवेन्द्रानन्द, अजमेर २३. श्री सुरेन्द्र आर्य, यमुनानगर २४. श्री रमेश चन्द एम. जैन, नवी मुम्बई २५. माता कौशल्या, अजमेर २६. डॉ. सत्यवीर सिंह, पानीपत २७. डॉ. मुरारीलाल पारीक, जयपुर २८. श्रीमती शकुन्तला देवी व श्री अनिल कुमार, अजमेर २९. श्रीमती मन्जू सिंघल, अजमेर ३०. श्री बलेश्वर मुनि, अजमेर ३१. श्रीमती सावित्री गहलोत, अजमेर ३२. श्रीमती प्रेमलता शर्मा, अजमेर ३३. श्री सत्यनारायण काबरा, अजमेर ३४. श्री मनीष पटेल, टंकारा।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

अन्न-संग्रह (दानदाता)

१. श्री नन्दकिशोर भंसाली, अजमेर २. डॉ. प्रशान्त शर्मा, अजमेर ३. श्री मयंक कुमार, अजमेर ४. श्री कन्हैयालाल खाती, अजमेर ५. श्री जगदीश यादव, अजमेर ६. श्री अमरचन्द माहेश्वरी, अजमेर ७. श्री मुकेश नवाल, अजमेर ८. मै. राजपूताना म्यूजिक हाउस, अजमेर ९. श्रीमती सुलोचना गौड़, अजमेर १०. श्री लालचन्द्र हेड़ा, ब्यावर ११. श्री आशुतोष पारीक, अजमेर १२. मै. वर्मा एण्ड कं., अजमेर १३. श्री महेशचन्द सोमानी, अजमेर १४. श्रीमती चम्पा देवी शर्मा, अजमेर १५. आर्यसमाज, कुचेरा १६. आर्यसमाज, नागौर १७. श्री नारायण सोनी, नौखा १८. आर्यसमाज पवनपुरी, बीकानेर १९. श्रीमती कमला यादव, बीकानेर २०. श्री रवीन्द्र कुलश्रेष्ठ, बीकानेर २१. डॉ. राधेश्याम आर्य, बीकानेर २२. श्री धर्मवीर आसेरी, बीकानेर २३. श्री रेवतराम, बीकानेर २४. नगर आर्यसमाज, बीकानेर २५. श्री शिव स्वामी, डूंगरगढ़ २६. श्री शान्ति सोनी, अजमेर २७. श्री पुरुषोत्तम बूब, अजमेर २८. श्री सतीश मूंदड़ा, इन्दौर २९. श्री ओमप्रकाश माहेश्वरी, अजमेर ३०. श्री मुरलीधर राठी, अजमेर ३१. श्री गोपीकृष्ण नवाल, अजमेर ३२. श्री मनीष पण्ड्या, अजमेर ३३. श्री ओमप्रकाश लढ्ढा, अजमेर ३४. मै. पूजा जनरल स्टोर, अजमेर ३५. श्री दामोदर सोमानी, अजमेर ३६. श्रीमती राजेश्वरी, श्रीगंगानगर ३७. श्री अभिलाष कुकना, श्रीगंगानगर ३८. उप-प्रधान, आर्यसमाज श्रीगंगानगर ३९. श्री वीरेन्द्र चौधरी, श्रीगंगानगर ४०. श्री सुरेन्द्र गोदारा, श्रीगंगानगर ४१. श्री द्वारका प्रसाद नागपाल, श्रीगंगानगर ४२. श्री ओमप्रकाश गुप्ता, श्रीगंगानगर ४३. श्री रवि वर्मा, श्रीगंगानगर ४४. श्री सुदर्शन नागपाल, श्रीगंगानगर ४३. श्री रामलाल यादव, श्रीगंगानगर ४४. श्री सुबोध, श्रीगंगानगर ४५. श्री भूपेन्द्र खन्ना, श्रीगंगानगर ४६. श्री रणवीर जाखड़, श्रीगंगानगर ४७. मै. नेतराम राजेशकुमार, श्रीगंगानगर ४८. मै. रामप्रताप रामकरण, श्रीगंगानगर ४९. श्री ध्वजराम जयदेव, श्रीगंगानगर ५०. श्री सोहनलाल सिंघाड़िया, श्रीगंगानगर ५१. डॉ. हनुमान प्रसाद आर्य, श्रीगंगानगर ५२. श्री सुनील विश्नोई, श्रीगंगानगर ५३. श्री जयकिशन विश्नोई, श्रीगंगानगर ५४. श्री राजकुमार नागला, सादुलशहर ५५. मै. महालक्ष्मी इन्डस्ट्रीज, हनुमानगढ़ ५६. श्री मदन लाल सोनी, सुजानगढ़ ५७. लारा कायाकल्प चिकित्सालय, आर्यसमाज सुजानगढ़ ५८. श्री जगदीश सैनी, सुजानगढ़ ५९. श्री रामलाल मगेथिया, सुजानगढ़ ६०. श्रीमती तारादेवी सोनी, सुजानगढ़ ६१. डॉ. उमेश आर्य, लाडनूं ६२. डॉ. राजेन्द्र सिंह आर्य, लाडनूं ६३. आर्यसमाज, लाडनूं ६४. आर्यसमाज, कुचामन ६५. श्री ब्रह्मप्रकाश लाहोटी, सुजानगढ़ ६६. श्री यशमुनि, परबतसर ६७. श्री रामस्वरूप मोदी, परबतसर ६८. श्री दशरथलाल नाथमल बांग, परबतसर ६९. श्री कमल माहेश्वरी, परबतसर ७०. श्री शिवदत्त काकाणी, जयपुर ७१. श्री रमाकान्त बाल्दी, अजमेर ७२. श्री सन्तोष परिहार, अजमेर ७३. मै. ड्रीम अचीवर्स सोसाइटी, अजमेर ७४. श्री ब्रजेश मिश्रा, अजमेर ७५. श्री श्याम प्रकाश सोमानी, अजमेर ७६. श्री हेमन्त कुमार, अजमेर ७७. श्री कृष्णसिंह राठी, झज्जर ७८. श्री ओमप्रकाश बाहेती, अजमेर ७९. श्री घनश्याम दास काबरा, अजमेर ८०. श्री लक्ष्मी नारायण मालू, अजमेर ८१. श्री ताराचन्द माहेश्वरी, अजमेर ८२. श्रीमती सुशीला देवी माहेश्वरी, अजमेर ८३. श्री उम्मेद राय काबरा, अजमेर ८४. दुर्गाशंकर कृष्ण कन्हैया मन्त्री चेरिटेबिल ट्रस्ट, अजमेर ८५. श्रीमती रेणु राय, अजमेर ८६. श्रीमती रीता मेहता, दिल्ली ८७. श्री रामस्वरूप कुमावत, अजमेर ८८. श्री आनन्द गर्ग, अजमेर ८९. श्री रामचन्द्र सोमानी, अजमेर ९०. श्री राम किशन तापड़िया, अजमेर ९१. श्री महेशचन्द सोनी, बीकानेर ९२. श्रीमती प्रतिभा एन. राजगुरु, अजमेर ९३. स्वामी सोमानन्द, ऋषि उद्यान, अजमेर ९४. श्रीमती सुशीला शर्मा, अजमेर ९५. श्री व्रतमुनि, ऋषि उद्यान, अजमेर ९६. श्री महेश सोनी, बीकानेर ९७. श्री रामेश्वरलाल सोनी, बीकानेर ९८. आर्यसमाज, सरदारशहर, चुरु ९९. पतंजलि चिकित्सालय, हनुमानगढ़ १००. श्री आनन्दमोहन शर्मा, हनुमानगढ़ जंक्शन १०१. श्री लाभचन्द आर्य, हनुमानगढ़ १०२. श्री सुभाष शास्त्री, डूंगरगढ़ १०३. श्री रामगोपाल आर्य, बीकानेर १०४. श्री जसराज बलवेन्द्र कुमार, श्रीगंगानगर १०५. श्रीमती उषा टाँक, श्रीगंगानगर १०६. श्री रामनिवास गोयल, श्रीगंगानगर १०७. श्री चन्द्रमुनि व श्रीमती विमला यादव, मन्नीवाली १०८. श्री प्रहलाद यादव, श्रीगंगानगर १०९. श्री सुशील सहगल, श्रीगंगानगर।

कर्ण के जन्म की पड़ताल

जगदीश प्रसाद हरित

कर्ण महाभारत का प्रमुख पात्र है। वह दुर्योधन का परम विश्वसनीय अन्तरंग मित्र है। उसी के शब्दों में:-

वसुदेवसुतो यद्वत् पाण्डवाय दृढव्रतः।
वसु चैव शरीरं च पुत्रदारं तथा यशः।।
सर्वं दुर्योधनस्यार्थे त्यक्तं वै भूरिदक्षिणः।

अर्थात् हे भीष्मजी! जिस प्रकार दृढ़प्रतिज्ञ श्री कृष्ण अर्जुन के लिये समर्पित हैं उसी प्रकार मेरा तन-मन-धन, पुत्र, दारा और यश सब कुछ दुर्योधन के लिये हैं। ये शब्द उसने तब कहे थे, जब पितामह शर-शैय्या पर पड़ चुके थे और कर्ण उनसे भेंट करने रात्रि में गया था। भीष्म जी ने उसे पाण्डवों के साथ मिल जाने का प्रस्ताव किया था और कुन्ती के गर्भ से उसके जन्म की कथा सुनायी थी। उसका उत्तर जिन शब्दों में उसने दिया वे मैत्री के गुणों की उच्चतम सीमा को रेखांकित करने वाले हैं। उसने वाणी से मात्र कहा ही नहीं, जो कहा करके भी दिखाया। भीष्म और द्रोण के धराशायी हुए पश्चात् कौरव सेना का सेनापतित्त्व उसे प्राप्त हुआ, तब युद्ध में अर्जुन का मुकाबला करते हुए समरांगण में दुर्योधन के लिये उसने प्राण त्यागे।

कर्ण के जन्म की कथा महाभारत वनपर्व अध्याय ३०३ से ३०९ तक विस्तार से दी गयी है और उसी रूप में वह जन-सामान्य में प्रचलित है। संक्षेप में दुर्वासा मुनि के वरदान रूप मन्त्र के प्रभाव से सूर्य द्वारा कुन्ती को कौमार्यावस्था में कर्ण का जन्म हुआ। लोक-लाज के वशीभूत कुन्ती ने शिशु को मंजूषा में रख, रात्रि में गंगा में प्रवाहित कर दिया। अधिरथ संत ने बहती हुई मंजूषा को देखा और निकाल लिया, इस प्रकार कर्ण को पाया। वह नि:सन्तान था, उसने बड़े लाड़-प्यार से उसे पाला-पोसा। युवावस्था में वह आकस्मिक रूप से कौरव सभा में आकर दुर्योधन का परममित्र बन गया। फिर जब महाभारत का संग्राम लड़ा गया तो जिन पाण्डवों के विरुद्ध वह लड़ा, वे उसके सहोदर भाई थे।

कर्ण-जन्म की पूर्वोक्त कथा के तीन साक्ष्य महाभारत में उपलब्ध हैं १- श्रीकृष्ण २- माता कुन्ती ३- पितामह भीष्म। उन सम्बद्ध प्रसंगों पर बुद्धि संगत चर्चा आगे करते हैं-

पाण्डवों के वनवास और अज्ञातवास की अवधि समाप्त हो जाने पर युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण को अपना दूत बनाकर हस्तिनापुर भेजा कि वे राज्य लौटाने की वार्ता कौरवों से करें। श्रीकृष्ण ने कौरव-सभा में अपना प्रभावशाली वक्तव्य दिया, पर व्यर्थ गया। दुर्योधन ने अपना हठ नहीं त्यागा। विश्वरूप प्रदर्शन के साथ जब सभा से कृष्ण ने प्रस्थान किया तब असफलता ही उनके हाथ लगी थी। लोकाचारवश भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य और कर्ण सहित कौरव पक्ष के राजा कृष्ण को विदा करने उनके पीछे चले। कृष्ण ने कुन्ती के भवन का मार्ग पकड़ा, जो कि हस्तिनापुर में ही थी। कुन्ती से भेंट कर चले तो कृष्ण ने भीष्मादि सहित कौरव पक्ष के सब राजाओं को तो विदा कर दिया पर कर्ण को अपने रथ पर बैठा लिया और उसके जन्म की वही कथा उसको सुनाई और कहा कि तुम पाण्डवों के ज्येष्ठ भ्राता हो, राजा तुम बनोगे, युधिष्ठिर सहित सभी पाण्डव तुम्हारी सेवा में होंगे.....इत्यादि कहकर पाण्डवों से मिल जाने का प्रलोभन दिया। कर्ण ने शिष्टतापूर्वक मना कर दिया। यह कृष्ण की दूसरी विफलता थी।

अब कृष्ण युधिष्ठिर के पास लौट चले। इधर कुन्ती स्वयं जाकर कर्ण से मिली। वह तब पहुँची जब कर्ण प्रात:काल एकान्त में सूर्योपासना में निमग्न था। उसके निवृत्त होने पर कुन्ती ने कर्ण के जन्म की वही कथा दोहराते हुए पाण्डवों से मिल जाने की प्रेरणा की। कर्ण ने पुनः दृढ़ता-पूर्वक अस्वीकार कर दिया, इतना आश्वासन अवश्य दिया कि हे माता! मेरा लक्ष्य मात्र अर्जुन है। या तो मैं उसे मारूँगा अथवा वह मुझे। तुम्हारे शेष पुत्रों को मैं नहीं मारूँगा।

अब सहज रूप से एक प्रश्न तो यह उठता है कि कृष्ण ने सब कौरव राजाओं को लौटाकर कर्ण से ही यह एकान्त वार्ता क्यों की? दूसरा यह कि सन्धि-वार्ता सर्वथा विफल हो जाने पर कृष्ण और फिर कुन्ती कर्ण के प्रति बहुत त्वरा दिखाते हैं। '**अत्युपचारः शंकितव्यः**'। यहाँ

सन्देह होना स्वाभाविक है। विफल मनोरथ श्री कृष्ण को युधिष्ठिर के समक्ष अपना दौत्य प्रतिवेदन देना है तो बड़ी विफलता के बीच में से छोटी सफलता की तलाश का यह प्रयास क्यों नहीं हो सकता। एक कल्पित कथा के द्वारा अज्ञात-जन्मा महारथी को दुर्योधन से तोड़ लेना दुर्योधन को पर्याप्त दुर्बल कर देता।

यह ध्यान में रखना आवश्यक है कि श्री कृष्ण सर्वतो भावेन पाण्डवों के हितैषी थे, इसे कर्ण भी जानता था- जैसा कि लेखक ने प्रारम्भ के उसी के कथन से प्रकट किया है। पुनः यह ज्ञातव्य है कि श्रीकृष्ण दूत के रूप में कौरव सभा में पहुँचने के पूर्व हस्तिनापुर में ही पहले बुआ कुन्ती से मिल चुके थे। इसे अनदेखा नहीं किया जा सकता। कुन्ती ने विस्तार से अपना दुखड़ा सुनाया था, वहाँ कर्ण की कोई चर्चा नहीं है। तो भी इस एकान्तिक वार्ता में भावी सम्भावित असफलता की दशा में एक दाँव कुन्ती के द्वारा लगाने की योजना तब क्यों नहीं बन सकती? सन्देह इस कारण अधिक गहरा जाता है कि कृष्ण और कुन्ती द्वारा कर्ण की ये मान-मनौतियाँ युद्ध के मुहाने पर की जा रही हैं। सन्धि-प्रस्ताव ठुकराया जा चुका था, शान्ति की कामना धूल चाट गई थी, युद्ध के सिवाय कोई मार्ग नहीं, पाण्डवों के प्राणों पर आसन्न संकट मंडरा रहा है। भले ही पाण्डव दुर्धर्ष वीर हों, युद्ध में जय-पराजय, जीवन-मरण सुनिश्चित नहीं होता। तभी तो श्री कृष्ण मात्र पाँच ग्राम लेकर भी शान्ति के लिये तत्पर थे, पर दुर्योधन ने इसे पाण्डवों की कायरता ही समझा और अन्त तक वह 'वीर-भोग्या वसुन्धरा' का उपासक बना रहा। ऐसे में कृष्ण जैसा नीति-निपुण, कुन्ती जिसकी बुआ और पाण्डव भाई हों, इतना तो कर ही सकता था।

युधिष्ठिर के समक्ष प्रस्तुत किये गये प्रतिवेदन से यह स्पष्ट हो जाता है कि उनका दौत्य-कर्म कोरी औपचारिकता नहीं थी। साम, दाम, दण्ड, भेद सब नीतियों का उन्होंने पूरा-पूरा प्रयोग किया। उन्हीं के शब्दों में-

साम- पुनः सामाभिसंयुक्तं सम्प्रदानमथाब्रुवम्।
अभेदात्कुरुवंशस्य कार्ययोगात् तथैव च।।

उद्योग. ३१-५

सर्वं भवतु ते राज्यं पञ्चग्रामान् विसर्जय।।

उद्योग. ३१-६

भेद- पुनर्भेदश्च मे युक्तो यदा साम न गृह्यते।।

उद्योग. ३१-४

तदा मया समानीय भेदिताः सर्व पार्थिनः।।
दण्ड- एवमुक्तोऽपिदुष्टात्मा नैव भागं व्यमुञ्चत।
दण्डं चतुर्थं पश्यामि तेषु पापेषु नान्यथा।।

दण्ड का प्रयोग तो अन्त में ही किया जाता है, जो युद्ध के रूप में सामने आने वाला था। सभा से निकलते हुए दुर्योधन पर अपना अति-मानवीय प्रभाव डालने के लिये श्री कृष्ण ने विश्वरूप का भी प्रदर्शन किया था। वे युधिष्ठिर से कहते हैं-

अद्भुतानि च घोराणि दारुणानि च भारत।
अमानुषाणि च कर्माणि दर्शितानि मया विभो।
अभेदात् कुरुवंशस्य कार्य योगात् तथैव च।।

- उद्योग. ३१-५

साम-नीति के प्रयोग में सौभ्राह को सद्भावपूर्वक समझा दिया, **दाम**-सब राज्य देकर पाँच गाँव पर सन्तुष्ट हो गए, **दण्ड** के अन्तिम विकल्प युद्ध की चुनौती दे दी परन्तु **भेद-नीति** का प्रयोग कहाँ किया यह विचारणीय है। भेद अर्थात् फूट डालना, शत्रु के पक्ष में से किसी को तोड़कर कमजोर करना।

उसका प्रयोग कर्ण के अतिरिक्त किसी और पर किया हो ऐसा महाभारत में देखने को नहीं मिलता। कर्ण के जन्म की कथा को यथावत् मान लेने पर तो माना जायेगा कि भेद नीति का प्रयोग ही कृष्ण ने नहीं किया। पर कृष्ण तो भेद के प्रयोग का डंका स्वयं पीट रहे हैं, तो यह कर्ण पर ही फलित हो सकता है। जो कृष्ण कर्ण को उसकी जन्म कथा सुनाते हुए उसे पाण्डवों का भाई कह रहे थे, वे ही युधिष्ठिर को अपना प्रतिवेदन देते हुए पुनः उसे राधेय ही कह गये- **'राधेयं भीषयित्वा च सौबलं च पुनः पुनः।'** इसी को कहते हैं जादू, वह जो सिर पर चढ़कर बोले।

अब कुन्ती के साक्ष्य पर थोड़ा और विचार कर लें। कुन्ती ने कर्ण से मिलकर जब उसे अपना पुत्र कहा तो कर्ण उस कथा के परीक्षण और विवाद में नहीं पड़ा, ना उलझा, पर प्रकारान्तर से उसके मातृत्व पर ही प्रश्नचिह्न लगा दिया-

न वै मम हितं पूर्वं मातृवच्चेष्टितं त्वया।

सा मां सम्बोधयस्यद्य केवलात्महितैषिणी।।

उद्योग. ३०-२७

अर्थात् तुमने इससे पूर्व तो माता के समान मेरे हित की कोई चेष्टा नहीं की, वही तुम मुझको अब जो कह रही हो तो केवल स्वार्थी होकर ही। कर्ण के इस कथन में कुछ असंगत भी नहीं। गंगा में विसर्जित कर देने के पश्चात् कभी उसने पश्चात्ताप के दो आँसू उसके हेतु गिराये? और जब कर्ण युवा होकर दुर्योधन का मित्र बन कौरव सभा में सम्मान पा रहा था, तब कभी खुशी का रोमांच उसे हुआ? महाभारत में युद्धपूर्व का कोई ऐसा प्रसंग उपलब्ध नहीं होता जब उसे अपने परित्यक्त पुत्र की स्मृति आई हो। अपने स्वयं के, पाण्डवों के और द्रौपदी के कष्टों का स्मरण कर कुन्ती बार-बार तड़प उठती है, पर कर्ण सदैव ओझल ही रहा और अब जब युद्ध मुंह बाए सामने खड़ा है और दोनों पक्ष एक-दूसरे की जान के प्यासे बने खड़े हैं, ऐसे में कर्ण के प्रति कुन्ती का मातृत्व अकस्मात् कैसे जग उठा?

कर्ण के जन्म की कथा के तीसरे साक्ष्य पितामह भीष्म हैं। कौरव सेना के प्रथम सेनापति भीष्म जब बाणों से छलनी हुए शर-शैय्या पर पड़े थे, वहाँ रात्रि के समय कर्ण उनसे भेंट करने आया। औपचारिकताओं के पश्चात् पितामह ने उससे जो कुछ कहा, उसका संकेत लेख के प्रारम्भ में आ चुका है। श्रीकृष्ण और कुन्ती जो कथा पहले उसे समझा चुके थे, वही उन्होंने कहा-

कौन्तेयस्त्वं न राधेयो न तवाधिरथः पिता।
सूर्यजस्त्वं महाबाहो विदितो नारदान्मया।।

- भीष्म. ३०-९

न द्वेषोऽस्ति मे तात त्वयि सत्यं ब्रवीमि ते।।

- (भीष्म पर्व, अन्तिम अध्याय)

यहाँ पितामह इतना विशेष कह रहे हैं- मुझे यह सब नारद और कृष्ण द्वैपायन व्यास से ज्ञात हुआ है। लेकिन वहीं अगले ही वाक्य में पितामह चूक कर बैठे, कर्ण को सूत-नन्दन कहकर सम्बोधित किया-

अकस्मात् पाण्डवान्सर्वानवाक्षिपसि सुव्रत।
येनासि बहुषो राजा नोदितः सूतनन्दन।।

- भीष्म. ३०-१०

अब उनके विरोधाभासी कथनों में किसे सत्य माना जाये? कौरव सभा में पितामह भीष्म और कर्ण के बीच प्रायः तकरार ठनी रहती थी। वे कर्ण को सूत-पुत्र जैसे कटुवचन कहकर प्रताड़ित करते रहते थे, उसको स्वयं पितामह ने स्वीकारा किया।

कुलभेद भ्याच्चाह सदा परुषमुक्तवान्।

एक बार तो भीष्म के वाग्बाणों से तिलमिलाया कर्ण अपने शस्त्रास्त्र पटककर ये प्रतिज्ञा करके कि भीष्म के जीतेजी सभा और रणभूमि में पैर न रखूँगा, सभा त्याग कर चला गया।

न्यस्यामि शस्त्राणि न जातु संख्ये,
पितामहो द्रक्ष्यति मां सभायाम्।

महाभारत के प्रथम सेनापति भीष्म जब दुर्योधन को अपने रथियों का विवरण सुना रहे थे, उन्होंने कर्ण को अर्ध रथियों की श्रेणी में रखा था, इस पर भी अमर्ष में भी कर्ण ने ऐसी ही प्रतिज्ञा की थी और निभाई थी। पितामह भीष्म के धराशायी हो जाने के उपरान्त ही कर्ण समरांगण में उतरा। यह प्रसंग दोनों महारथियों की कटुता की परकाष्ठा को इंगित करता है, परन्तु अन्त समय में पितामह भीष्म पिघलकर मोम हो गए और अपने अन्तिम समय में शान्ति स्थापना का उद्योग इन शब्दों में करने लगे।

सोदर्याः पाण्डवा वीरा भ्रातरस्तेऽरिसूदन।
संगच्छतैर्महाबाहो मम चेदिच्छसि प्रियम्।।
मया भवतु निवृत्तं वैरमादित्य नन्दन।
पृथिव्यां सर्व राजानो भवन्त्वद्य निरामयाः।।

- भीष्म. ३०.१८-१९

अर्थात् पांडव तुम्हारे सगे भाई हैं। मेरी प्रसन्नता इस बात में है कि तुम उनके साथ मिल जाओ। मेरी मृत्यु के द्वारा यह वैर की आग बुझ जाये। पृथ्वी भर के सब राजा निरामय हो जायें। इस अन्तिम वाक्य में पितामह ने अपने हृदय को खोलकर उँडेल दिया है और अपनी अन्तिम अभिलाषा प्रकट कर दी है। पर जैसे शान्ति की अभिलाषा में पहले कृष्ण विफल हो गये थे, वैसे इस बार भीष्म भी। कर्ण ने फिर अस्वीकृति में हाथ उठाया और जो उत्तर दिया वह जो पूर्व में भी उद्धृत किया था-

वसु चैव शरीरं च पुत्रदारं तथा यशः।
सर्वं दुर्योधनस्यार्थे त्यक्तं वै भूरिदक्षिणः।

इस पर यक्ष प्रश्न यह है कि कर्ण-जन्म की इस घटना को दीर्घकाल तक आखिर क्यों छुपाया गया। कृष्ण ने इसे तब खोला जब वे शान्तिदूत के रूप में विफल हो गये थे, कुन्ती ने और भी बाद में, जब कृष्ण दुर्योधन के बाद कर्ण से भी निराश हो चुके, पुनः पितामह ने रहस्य को खोला जब युद्ध प्रारम्भ होकर वे स्वयं मृत्यु की दाढ़ों में थे। प्रश्न ये भी है कि क्या इस रहस्य से पर्दा उठाने का इन साक्ष्य महारथियों को कोई अवसर अब तक नहीं मिला था?

अब थोड़ा पीछे मुड़कर देखिये। द्रोणाचार्य कौरव-पाण्डव दोनों के गुरु थे। दुर्योधन तब भी पाण्डवों से ईर्ष्या करता था। राजकुमारों की शिक्षा समाप्त होने पर आचार्य ने राजपुत्रों के कौशल के प्रदर्शनार्थ राज-परिवार की भव्य सभा रखी। प्रदर्शन के अन्तिम चरण में अर्जुन के कौशल प्रदर्शन के अनन्तर नाटकीय ढंग से कर्ण का आगमन हुआ। उसने अर्जुन को चुनौती देते हुए कहा कि तुमने जो-जो आश्चर्यकारक प्रदर्शन किये हैं, उन सबको मैं अधिक अच्छी प्रकार दिखा सकता हूँ। फिर द्रोणाचार्य की स्वीकृति लेकर उसने दिखा भी दिये। इससे दुर्योधन ने उसके प्रति आकर्षित होकर उसका आलिंगन किया, जबकि अर्जुन ने उसके प्रति कटु वचन सुनाये, इस प्रकार अर्जुन और कर्ण का वाग्युद्ध प्रारम्भ हो गया जो अन्त में वास्तविक भिड़न्त के निकट पहुँच गया। तब कृपाचार्य ने बीच में पड़कर कर्ण से माता-पिता और कुल विषयक प्रश्न पूछे। इस प्रकार एक अकुलीन के साथ राजपुत्र के युद्ध को निषिद्ध कर दिया। तभी दुर्योधन ने उसे अंगदेश का राजा घोषित कर तत्काल राज्याभिषेक करके अकुलीनता का निराकरण किया। इस प्रकार दोनों में दृढ़ मैत्री हो गई। इसी बीच अकस्मात् वहाँ अधिरथ प्रकट होता है, जो कर्ण का आलिंगन कर उसे आशीर्वाद देता है, कर्ण के सूत-पुत्र होने की पुष्टि हो जाती है। अर्जुन के साथ संग्राम टल जाता है। इस सभा में पितामह भीष्म और माता कुन्ती दोनों उपस्थित थे। सारा घटनाक्रम उनके सामने घटित हुआ था, पर दोनों चुप्पी साधे रहे, क्यों? इसी प्रकार द्रौपदी के स्वयंवर में कर्ण भी पहुँचा था और उसने लक्ष्य-वेध भी किया था, परन्तु सूत होने से द्रौपदी ने उसे वरने से मना कर दिया। वहाँ श्री कृष्ण उपस्थित थे, तब वहाँ भी उन्होंने मौन ही साधे रखा, यह भी रहस्य है।

सीधी बात यह निकल आई कि कर्ण अधिरथ का पालित पुत्र था जो उसकी पत्नी राधा के नाम पर राधेय नाम से ख्यात हुआ। इसी रूप में कृष्ण, कुन्ती और भीष्म सहित समकालीन समाज इसे जानता-समझता था। जब महाभारत युद्ध उपस्थित हुआ, सन्धिवार्ता विफल हुई तो पाण्डवों के परम-शुभचिन्तक और महाभारत के परिणामों के निर्माता श्री कृष्ण ने दुर्योधन को दुर्बल कर पाण्डवों के पक्ष-पोषण के उद्देश्य से कुन्ती की गोपनीय स्वीकृति के साथ यह कल्पित कथा रची और यथावसर उसका प्रयोग किया और कराया, परन्तु कर्ण जैसे ठोस व्यक्तित्व के सम्मुख उनके निहितार्थ फलित न हो सके।

मनुष्यों को चाहिये कि अपने पुरुषार्थ से सुवर्ण आदि धन को इकट्ठा कर घोड़े आदि उत्तम पशुओं को रक्खें क्योंकि जब तक इस सामग्री को नहीं रखते तब तक गृहाश्रमरूपी यज्ञ परिपूर्ण नहीं कर सकते इसलिये सदा पुरुषार्थ से गृहाश्रम की उन्नति करते रहें।

- **महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६३**

जब तक मनुष्य सुख-दु:ख, हानि और लाभ की व्यवस्था में परस्पर अपने आत्मा के तुल्य दूसरे को न जानते तब तक पूर्ण सुख को प्राप्त नहीं होते, इससे मनुष्य लोग श्रेष्ठ व्यवहार ही किया करें।

-महर्षि दयानन्द, यजु.,भा ५.४०

सब व्यवहार करने वालों को चाहिये कि जो मनुष्य जिस काम में चतुर हो उसको उसी काम में प्रवृत्त करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२०

वैचारिक क्रान्ति हेतु सत्यार्थप्रकाश व ऋषि जीवन-चरित्र प्रचार-प्रसार की भव्य योजना

विचार किसी भी देश, समाज व जाति की अमूल्य निधि (सम्पत्ति) है। जिसके पास में श्रेष्ठ विचार नहीं या फिर विचार को फैलाने के साधन नहीं हैं या फिर जो व्यक्ति, समाज व राष्ट्र अपने विचारों की अवहेलना करते रहते हैं, उनका अस्तित्त्व भी एक दिन समाप्तप्राय: हो जाता है। आज हर सम्प्रदाय, समाज, समूह व देश अपने विचारों का प्रचार-प्रसार बड़ी प्रबलता से हर क्षेत्र में व हर साधन से कर रहा है, लेकिन काफी समय से आर्यसमाज में वैचारिक शिथिलता देखी जा रही है। इस शिथिलता को दूर करने का मात्र एक ही उपाय है कि हम सभी आर्यजन ऋषि दयानन्द सरस्वती कृत **अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश व ऋषि जीवन चरित्र का प्रचार नये शिक्षित लोगों में करें।** इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर सभा के माध्यम से विश्व पुस्तक मेला दिल्ली में वर्ष २०१४ से लगातार इन ग्रन्थों का नि:शुल्क वितरण किया जा रहा है।

सत्यार्थप्रकाश ही क्यों?-१. यदि कोई व्यक्ति, समाज, समूह, संस्था या राष्ट्र एक ग्रन्थ (पुस्तक) पढ़कर विस्तृत ज्ञान प्राप्त करना चाहे तो यह सत्यार्थप्रकाश से ही सम्भव है। २. आज के दूषित वातावरण में वैदिक वाङ्मय को ठीक-ठीक जानने हेतु, पढ़ने-पढ़ाने हेतु प्रथम सत्यार्थप्रकाश और महर्षि के अन्य ग्रन्थों को पढ़ना-जानना अत्यन्त आवश्यक है। ३. दर्शनशास्त्र, इतिहास, भारतीय-परम्परा, कर्त्तव्य, धर्म-अधर्म, उचित-अनुचित, न्याय-अन्याय, सत्य-असत्य तथा मानवता आदि क्या हैं? - यह सारी जानकारी सत्यार्थप्रकाश से प्राप्त होती है। ४. पाखण्ड, कुरीतियों व बुराइयों का नाश भी सत्यार्थप्रकाश से सम्भव है। ५. सत्यार्थप्रकाश व ऋषि के अन्य ग्रन्थों की उपस्थिति में कोई विधर्मी अपनी शेखी नहीं मार सकता तथा किसी भी हिन्दू को बहकाकर विधर्मी नहीं बना सकता। ६. सत्यार्थप्रकाश के प्रभाव ने न जाने कितनों का जीवन ही बदल डाला। सत्यार्थप्रकाश के जोड़ की दूसरी पुस्तक दुर्लभ है, जिसमें ज्ञान का अमूल्य खजाना भरा पड़ा है। इसलिए इसका प्रचार-प्रसार अनिवार्य है। **योजना का विवरण निम्न प्रकार का होगा-१. सत्यार्थप्रकाश (हिन्दी में)** आकार लगभग ६०० पृष्ठ व साइज डिमाई आकार में होगा। लागत मूल्य १००/- रुपये प्रति पुस्तक। **२. ऋषि जीवन चरित्र (हिन्दी में)** लगभग १६४ पृष्ठ व साईज डिमाई आकार में। लागत मूल्य ६०/- रुपये प्रति पुस्तक। **३. महर्षि द्वारा रचित पुस्तक आर्याभिविनय (हिन्दी में)** ६४ पृष्ठ व साइज डिमाई आकार में, लागत मूल्य ३०/- रु. प्रति पुस्तक।

नोट-यह साहित्य वैचारिक क्रान्ति के लिए व वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार के लिए गैर आर्यसमाजी सज्जनों व संस्थानों आदि को नि:शुल्क या अल्प मूल्य में वितरित किया जायेगा। साहित्य का ठीक-ठीक उपयोग हो व योग्य, शिक्षित, विचारवान् व्यक्तियों तथा संस्थानों तक पहुँचे इसके लिए वितरण व्यवस्था की जाएगी। योग्य प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं का चयन कर कार्य में नियुक्त किया जायेगा। प्रत्येक व्यक्ति, संस्था आदि से एक फार्म भरवाया जायेगा, जिसमें उनका पूर्ण पता, सम्पर्क आदि हो, जिससे भविष्य में परिणाम का मूल्यांकन किया जा सके। ग्रन्थों की प्रामाणिकता, शुद्धता व साज-सज्जा तथा सुन्दरता का विशेष ध्यान रखा जायेगा। इस प्रचार-प्रसार योजना का उद्देश्य सत्यार्थप्रकाश व महर्षि के जीवन-चरित्र के प्रचार-प्रसार के माध्यम से मानव मात्र का कल्याण करना है। यह प्रचार-प्रसार मुख्य रूप से शिक्षित गैर आर्यसमाजी लोगों के लिए होगा। यह कार्य पूर्णरूप से महर्षि के मन्तव्यों के अनुरूप हो इसका विशेष ध्यान रखा जायेगा। इस कार्य की सफलता के लिए सभी आर्यजनों से, समाजों से व संस्थानों से निवेदन है कि इस महान् कार्य में तन-मन-धन से अपना सहयोग करने व अपने इष्ट मित्रों को भी सहयोग करने की प्रेरणा करें।

नोट-अपना आर्थिक सहयोग आप परोपकारिणी सभा अजमेर के नाम प्रेषित करते समय **सत्यार्थप्रकाश प्रचार-प्रसार शीर्षक** अवश्य लिखें। धन प्रेषित करने हेतु आप चैक, ड्राफ्ट व सीधे राशि सभा के बैंक खाते में जमा करवाकर जमा पर्ची की प्रतिलिपि प्रेषित कर देवें या फिर ईमेल, दूरभाष द्वारा सूचित कर सकते हैं। धन्यवाद।

खाता धारक का नाम-**परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**
बैंक खाता संख्या-**10158172715**
IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आइ**, पावर हाऊस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
बैंक खाता संख्या-**091104000057530**
IFSC-IBKL0000091
email : psabhaa@gmail.com

नोट : इस योजना हेतु दिया गया दान आयकर की धारा ८० जी के अन्तर्गत कर मुक्त होगा।

सम्पर्क : मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

शंङ्का - समाधान - ३

डॉ. वेदपाल

शङ्का- ओ३म् जय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे।.......।

यह आरती पूरा हिन्दू समुदाय गाता है। पूजा-पाठ के बाद बोलते हैं और थाली में दक्षिणा डालते हैं। पौराणिक हो या आर्यसमाजी, सभी हवन, यज्ञ, कथावार्ता के बाद आरती बोलकर कार्य समाप्त करते हैं। अनेक बार पढ़ने को मिलता है 'अवैदिक' प्रार्थना है। रचयिता की इस रचना में क्या ठीक नहीं बैठता है, समझ में नहीं आता है।

सोनालाल नेमधारी
मॉरीशस

समाधान- नेमधारी जी की शङ्का का सार है कि इस आरती में अवैदिक=वेद के प्रतिकूल क्या है?

प्रामाण्य-अप्रामाण्य अर्थात् कौन से मन्तव्य या ग्रन्थ प्रामाणिक-मानने के योग्य, अप्रामाणिक-मानने, स्वीकार करने के अयोग्य हैं अथवा त्याज्य हैं- इस सन्दर्भ में महर्षि दयानन्द का सुस्पष्ट मत है-जो भी मन्तव्य-सिद्धान्त या ग्रन्थ वेदानुकूल नहीं हैं, वह अमन्तव्य हैं, त्याज्य हैं। इस विषय में विशेष रूप से महर्षि द्वारा समय-समय पर प्रकाशित विज्ञापन द्रष्टव्य हैं। तद्यथा-विज्ञापन संख्या ८,४३- ''महर्षि दयानन्द सरस्वती का महत्त्वपूर्ण पत्र-व्यवहार'' (प्रकाशक-परोपकारिणी सभा, अजमेर, संस्करण प्रथम, २०१६ ई.)।

पौराणिक जगत् में किसी भी विग्रह (देव प्रतिमा अथवा किसी देव/आराध्य का चित्र आदि) के पूजा प्रकार में आरती महत्त्वपूर्ण है। दीप प्रज्वलित कर उसे विग्रह (देव प्रतिमा, मूर्ति आदि) के समक्ष एक विशेष प्रकार से घुमाना (घुमाते समय भले ही कोई गीत आदि गाया जाए अथवा नहीं) आरती है। यह दीपक को (जिनमें पकड़ने के लिये हैन्डल बने हैं) हाथ में पकड़कर (जैसा कि दूरदर्शन पर गंगा आरती करते हुए मुनि चिदानन्द जी के हाथ में देखा जा सकता है।) अथवा उसे किसी स्थाली-थाली आदि में रखकर दीपक को स्थाली सहित घुमाते हुए की जाती है। सत्यनारायण आदि की कथा-पूर्ति पर की जाने वाली आरती की स्थाली में ही उपस्थित जन द्रव्य भी समर्पित कर देते हैं।

प्रस्तुत शङ्का के समाधान हेतु उपरिलिखित ओ३म् जय जगदीश हरे-आरती की पृष्ठभूमि को ध्यान में रखना उचित रहेगा। वैष्णव सम्प्रदायों में ज्ञान-कर्म की अपेक्षा भक्ति पर विशेष बल दिया गया है। नारद भक्ति सूत्र-''सा तु कर्मज्ञान-योगेभ्योऽप्याधिकतरा'' ४.२५ के अनुसार भक्ति कर्म, ज्ञान और योग से भी बढ़कर है। नारद पंचरात्र में हरि की भक्ति को महादेवी तथा मुक्ति-भुक्ति आदि को भक्ति की चेटी (दासी) कहा गया है। तद्यथा-

हरिभक्ति महादेव्याः सर्वा मुक्त्यादिसिद्धयः।
भुक्तयश्चाद्भुतास्तस्याः चेटिकावदनुव्रताः।।

आचार्य रामानुज के विशिष्टाद्वैत सम्प्रदाय के अवान्तर भेद 'दक्षिण सम्प्रदाय' में भक्ति के साथ प्रपत्ति=शरणागति को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। इस मत में 'मार्जारकिशोर न्याय' का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जिस प्रकार बिल्ली अपने बच्चे को इधर-उधर एक स्थान से दूसरे स्थान ले जाती है। इसमें बच्चे को कोई प्रयत्न नहीं करना होता। इसी प्रकार मात्र प्रपत्ति= शरणागति (ज्ञान, कर्म, भक्ति-उपासना को छोड़कर केवल ईश्वर की शरण में हो जाना अथवा स्वयं को उसके भरोसे छोड़ देना) के बाद त्रिविध दु:खनिवृत्ति के लिए जीव को कोई प्रयत्न-पुरुषार्थ कर्त्तव्य नहीं रहता है।

वैदिक कर्म सिद्धान्त में जहाँ कर्म तो यावज्जीवन करणीय हैं ही (कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः- यजु. ४०.२) वहीं उन कर्मों का फल (शुभ-अशुभ कर्मों का फल पुण्य-पाप/सुख-दु:ख के रूप में) अवश्य ही भोक्तव्य है। इससे निष्कृति-छुटकारे का (बिना भोगे) कोई उपाय नहीं है।

महर्षि दयानन्द भक्ति/उपासना का विधान तो करते हैं, किन्तु महर्षि की यह भक्ति पूर्ण पुरुषार्थ से ही प्रारम्भ होती है। अत: बिना पुरुषार्थ मात्र गीत गाने या शरणागति मात्र से दु:खों से छुटकारा तथा मनोवांछित पदार्थों की उपलब्धि मानना पूर्णत: अवैदिक है।

प्रस्तुत आलोच्य आरती एक छद्म पौराणिक सज्जन श्रद्धाराम फिल्लौरी द्वारा रचित है। इस आरती में अनेक शब्द बदले जा चुके हैं। कुछ परिवर्तन के साथ लेखक के रूप में भी कुछ सज्जन अपने नाम भी इसमें जोड़ चुके हैं। इतना होते हुए भी इसमें एकाधिक बार -'भक्त जनन के संकट क्षण में दूर करे। जो ध्यावे फल पावे, दु:ख विनशे मन का। सुख सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का।....शरण गहूँ किस की।......करुणा हस्त बढ़ाओ, शरण पड़ा तेरे। आदि-आदि अनेक ऐसे शब्द हैं,' जिनमें कर्म की अपेक्षा शरणागति पर बल दिया गया है। इस प्रकार के शब्दों की वेदानुकूलता का प्रतिपादन किसी प्रकार भी सम्भव नहीं है।

आरती के बाद स्थाली में समर्पित द्रव्य (दक्षिणा-स्वरूप प्रदत्त धन) के कथावाचक अथवा किसी भी संस्था (भले ही वह आर्यसमाज क्यों न हो) को प्राप्त होने के लोभ ने इस परम्परा को न केवल जीवित रखा है, अपितु इसके प्रसार में अप्रतिम योगदान दिया है। इस लोभ के कारण ही सामने विग्रह (मूर्ति आदि) न होने पर भी यज्ञ जैसे पवित्र अवसरों पर भी एकाध स्थान पर आरती गाकर स्थाली में चढ़ावा चढ़ाने की परम्परा चल पड़ी है। इसमें न तो वास्तविक भक्ति है और न ही वैदिक कर्मवाद। है तो केवल वैष्णव प्रपत्ति=शरणागति। अत: यह अवैदिक ही कही जाएगी। यदि कोई वेदानुयायी कहलाने वाला इसे बोल भी रहा है, तो उससे यह वेदानुकूल नहीं हो जाएगी।

आचार्य धर्मवीर जी की स्मृति में स्थिर-निधि

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने परोपकारिणी सभा की स्थापना करते समय तीन उद्देश्य रखे थे-

१. वेद और वेदांगादि शास्त्रों के प्रचार अर्थात् उनकी व्याख्या करने-कराने, पढ़ने-पढ़ाने, सुनने-सुनाने, छापने-छपवाने आदि में, २. वेदोक्त-धर्म के उपदेश और शिक्षा अर्थात् उपदेशक-मण्डली नियत करके देश-देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर में भेजकर सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग कराने आदि में ३. आर्यावर्तीय अनाथ और दीन मनुष्यों के संरक्षण, पोषण और सुशिक्षा में व्यय करें और करावें।

इन कार्यों को करने के लिये सभा का वर्तमान मासिक व्यय लगभग १२ लाख रुपये है, जो कि आर्यजनों के दान पर ही निर्भर है। परोपकारिणी सभा के कार्यकारिणी अधिवेशन सं. २२९ एवं साधारण अधिवेशन सं. १२० के प्रस्ताव १३ में आचार्य धर्मवीर जी द्वारा प्रारम्भ किये गये बृहत् प्रकल्पों (प्रकाशन, प्रचार, अध्यापन आदि) के लिये आचार्य धर्मवीर जी की स्मृति में एक करोड़ रुपये की स्थिर-निधि बनाने का संकल्प लिया गया है। आर्यजनों से निवेदन है कि इस पुनीत कार्य में अपना अधिक से अधिक सहयोग प्रदान कर आचार्य जी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करें।

आप अपना दान चैक, ड्राफ्ट या सभा के खाते में सीधे भी भेज सकते हैं। कृपया, राशि भेजने के पश्चात् सभा में दूरभाष या पत्र द्वारा अवश्य सूचित कर दें।

मन्त्री

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४

जो विद्या की वृद्धि के लिए पठन-पाठन रूप यज्ञ कर्म्म करने वाला मनुष्य है वह अपने यज्ञ के अनुष्ठान से सब की पुष्टि तथा संतोष करने वाला होता है इस से ऐसा प्रयत्न सब मनुष्यों को करना उचित है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.२७

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं, वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४१

संस्था - समाचार

परोपकारिणी सभा के मन्त्री जी की यात्रा का विवरण- किशनगढ़, अजमेर में बने नवीन एयरपोर्ट (विमानपत्तन) का नाम महर्षि दयानन्द के नाम से करवाने विषयक चर्चा के लिये सभा के मन्त्री श्री ओममुनि जी ने हिमाचल के राज्यपाल महामहिम डॉ. देवव्रत जी से भेंट की। माननीय राज्यपाल जी ने इस विषय पर प्रधानमन्त्री कार्यालय से चर्चा करने व यथा सम्भव सहयोग करने का आश्वासन दिया।

सभी आर्यसमाजों व अन्य आर्यसंस्थाओं से भी निवेदन है कि वे अपने-अपने स्तर पर सरकार को पत्र लिखें, जिससे ऋषि की निर्वाणस्थली पर आने वाला हर व्यक्ति ऋषि से परिचित हो सके।

अपनी इस यात्रा के अन्तर्गत सभा-मन्त्री ओममुनि जी राजस्थान के लोकायुक्त श्री सज्जनसिंह कोठारी से भी मिले। पानीपत के श्रेष्ठी ओमप्रकाश जी से सभा के लिये प्रिंटिंग प्रेस के बारे में बात की, जिसका उन्हें सकारात्मक आश्वासन भी मिला। वैदिक गवेषक व पूर्व सांसद डॉ. रामप्रकाश जी से भेंट कर उनके स्वास्थ्य कुशल-क्षेम पर भी बात हुई।

आर्यसमाज, ब्यावर द्वारा आयोजित स्वामी श्रद्धानन्द संन्यास दीक्षा शताब्दी समारोह में भी मुनि जी ने आर्यजनों को सम्बोधित किया। इस समारोह में लोकायुक्त श्री सज्जनसिंह कोठारी भी उपस्थित थे।

यज्ञ एवं प्रवचन- ऋषि उद्यान आर्य जगत् के उन स्थलों में से है, जहाँ पूरे वर्ष प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ का अनुष्ठान अपरिहार्य रूप से किया जाता है। प्रात:काल यज्ञोपरान्त वेद के कुछ मन्त्रों का पाठ तथा महर्षि दयानन्द कृत वेदभाष्य का स्वाध्याय किया जाता है और तदनन्तर वेद-प्रवचन होता है। रविवार प्रात:काल के प्रवचन में समसामयिक सामाजिक, राष्ट्रीय घटनाक्रमों पर व्याख्यान होता है। पूरे वर्ष भर ऋषि उद्यान स्थित महर्षि दयानन्द सरस्वती भवन में दयानन्द चित्र-दीर्घा एवं वस्तु-प्रदर्शनी को देखने के लिए तथा यज्ञ-प्रवचन से लाभ लेने के लिए देश के विभिन्न भागों से स्त्री-पुरुष आते रहते हैं।

प्रात: कालीन प्रवचन में ऋग्वेद के मन्त्रों की व्याख्या करते हुए **आचार्य सत्यजित् जी** ने राजा के विषय में बताया कि राजा सूर्य के समान प्रतापी और अपने कार्यों को शीघ्र सिद्ध करने वाला होना चाहिये। जिसके तेज के सामने कोई शत्रु टिक न सके। वह राष्ट्र का नेता, शासक, प्रबन्धक होता है। राजा को राज्य की सुरक्षा, शिक्षा, न्याय, भरण-पोषण और जनता की अन्य सुविधाओं के लिए साधनों की पूर्ति करने वाले अनेक अधिकारियों, कर्मचारियों की आवश्यकता होती है। उनके अधीन कार्य करने वाले अधिकारी और कर्मचारी सब धार्मिक होने चाहिये।

रविवारीय प्रात:कालीन प्रवचन में आचार्य जी ने कहा कि हम सब अपने-अपने ढंग से स्वयं का जीवन चलाते हैं। प्रकृति से, वस्तुओं से, व्यक्तियों से व्यवहार करते रहते हैं। हमारे जीवन का मूल आधार विश्वास है। ईश्वर पर विश्वास, अपने सगे सम्बन्धियों, मित्रों, गुरुजनों पर विश्वास, समाज, राजा, सेना, न्यायधीश और पुलिस पर विश्वास, अपने ज्ञान-बल-सामर्थ्य तथा सांसारिक पदार्थों पर विश्वास के बिना हमारा काम नहीं चल सकता। महर्षि दयानन्द के अनुसार जिसका मूल और फल निश्चय ही सत्य हो उसका नाम विश्वास है।

प्रात:कालीन प्रवचन में **आचार्य सोमदेव जी** ने कहा कि जो व्यक्ति जैसे का संग करता है वह कुछ-कुछ वैसा ही होने लग जाता है। महापुरुषों, ऋषियों का संग करने से बड़प्पन आता है, उन्नति होती है। ऋषियों से द्वेष और दुष्ट, हीन, निम्न लोगों का संग करने से छोटापन, निम्नता आती है।

सोमवार से शुक्रवार तक सायंकालीन सत्संग में 'उपदेश मंजरी' पुस्तक का पाठ एवं चर्चा होती है। **उपाचार्य सत्येन्द्र जी** ने बताया कि महर्षि स्वामी दयानन्द जी अपने प्रवचनों में वेद और वेद अनुकूल मान्यताओं, ऋषियों के बनाये ग्रन्थों का युक्ति प्रमाण सहित मण्डन करते थे। साथ ही बड़ी निर्भीकता से वेदविरुद्ध अन्ध परम्पराओं का जोरदार

खण्डन भी करते थे। स्वामी जी के प्रचार से पहले ईश्वर, देवता, वेद, धर्म, सृष्टि-उत्पत्ति, राष्ट्र, आर्य, वर्ण-आश्रम, राजनीति, योगाभ्यास, खानपान, विवाह आदि संस्कार, नियोग और इतिहास के विषय में बहुत सी भ्रान्तियाँ थी। उस काल के विद्वान् छह दर्शनों में परस्पर विरोध मानते थे। स्वामी जी छहों दर्शन- सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त के वास्तविक विषय और उनमें परस्पर सम्बन्धों को बहुत सरल शब्दों में समझाते थे।

शनिवार सायंकालीन प्रवचन में **श्री व्रतमुनि जी** ने वानप्रस्थ आश्रम-हरिद्वार, गंगोत्री एवं ऋषिकेश प्रवास के प्रेरक संस्मरण सुनाये।

श्री आर्येश्वर ने कहा कि मनुष्य जीवन की सार्थकता श्रेष्ठ कर्म करने में है। श्रेष्ठ कर्म किये बिना मनुष्य और पशु में कोई अन्तर नहीं है।

रविवारीय प्रातःकालीन सत्संग में **ब्र. तीर्थराम जी** ने भजन सुनाया- भगवान तुम्हारी दुनिया का यह कैसा अजब नजारा है.......। सायंकालीन प्रवचन में **ब्र. विनोद जी** ने कहा देशभक्त बनने के लिए ईश्वरभक्त और धार्मिक होना जरुरी है। जिस व्यक्ति का जो कर्तव्य है, उसे वह ईमानदारी और परिश्रमपूर्वक करता है तो वह धार्मिक है। विद्वान् बनने से पहले धार्मिक बनना आवश्यक है। देश में उपलब्ध साधनों का सदुपयोग करना देशभक्ति है और दुरुपयोग करना देशद्रोह है। जो देशभक्त होता है वही क्रान्तिकारी हो सकता है। वर्तमान में वैचारिक क्रान्ति की आवश्यकता है।

आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न-१४ मई रविवार सायं ५ बजे परोपकारिणी सभा के मन्त्री श्री ओममुनि जी द्वारा सरस्वती भवन के प्रांगण में ध्वजारोहण से इस शिविर का आरम्भ हुआ। यह शिविर परोपकारिणी सभा एवं आर्यवीर दल, अजमेर द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है। इस कार्यक्रम में अजमेर के जिलाधीश श्री गौरव गोयल जी अपनी पत्नि के साथ उपस्थित हुए। अपने उद्‌बोधन में उन्होंने आर्यवीरों को जीवन में अनुशासन का महत्व बताया। शिविर में प्रशिक्षक श्री सुशील शर्मा एवं श्री अभिषेक जी के मार्गदर्शन में १२० आर्यवीर भाग ले रहे हैं। एक सप्ताह तक शिविरार्थियों को विभिन्न कक्षाओं में योगासन, प्राणायाम, यज्ञ, नैतिक शिक्षा, विभिन्न व्यायाम, अस्त्र-शस्त्र का संचालन योग्य शिक्षकों द्वारा दिया गया। शिविर में बौद्धिक का संचालन श्री प्रभाकर आर्य द्वारा किया गया। विद्वानों द्वारा बौद्धिक कक्षाओं में विशेष मार्गदर्शन दिया गया। कार्यक्रम में श्रीमती ज्योत्स्ना जी, मुमुक्षु मुनि जी, डॉ. रमेश मुनि जी, स्वामी सोमानन्द जी, डॉ. नन्दकिशोर काबरा जी एवं ऋषि उद्यान में साधनारत संन्यासी, वानप्रस्थी एवं शिविरार्थियों के अभिभावकगण सम्मिलित हुए। कार्यक्रम का संचालन आर्यवीर दल के जिला संचालक श्री विश्वास पारीक जी ने किया।

अतिथि- विद्वानों-संन्यासियों से मिलने, यज्ञ एवं प्रवचन से लाभ लेने, भ्रमण तथा प्रचार हेतु ब्रह्मचारी, संन्यासी, वानप्रस्थी, गृहस्थ स्त्री-पुरुष आते रहते हैं। इसी क्रम में पिछले पन्द्रह दिनों में हरिद्वार, गंगटोक, देहरादून, माउण्ट आबू, पानीपत, अम्बाला, जोधपुर, जयपुर, कोटा, मथुरा, बीकानेर, रोजड़, नोएडा, बंगलौर, नीमच, झज्जर, बांका बिहार आदि स्थानों से कुल ५३ अतिथि ऋषि उद्यान आये।

विभिन्न संस्कार तथा अतिथि-यज्ञ के होता- ऋषि उद्यान की यज्ञशाला में श्री नवीन मिश्रा के सुपुत्र गौरव मिश्रा ने अपने जन्मदिन पर सपत्नीक यज्ञ किया। वैदिक यन्त्रालय के प्रबन्धक श्री राजेश मिश्रा की नवविवाहिता सुपुत्री सोनम ने अपने पति अभय जी के साथ यज्ञ किया। अम्बाला कैन्ट से आये श्री ऋषभ गुप्ता ने अपने जन्मदिवस पर यज्ञ किया। इस अवसर पर संन्यासियों, विद्वानों तथा सभी वृद्धजनों ने यजमान परिवारों को अपने-अपने आशीर्वाद प्रदान किये। श्रीमती उषा रमेश मुनि जी ने अपनी माता श्रीमती शीला देवी की पुण्य तिथि पर यज्ञ किया। परोपकारिणी सभा, महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल एवं ऋषि उद्यान परिवार की ओर से यजमानों के दीर्घ आयु की प्रार्थना करते हुए हार्दिक शुभकामनाएँ।

*** आचार्य सोमदेव जी का प्रचार कार्यक्रम-**

आगामी कार्यक्रम-

१७-१८ जून २०१७: कनीना, हरियाणा।

मुझसे मेरे हमदम न पूछ मैं क्या हूँ ?
पं. चमूपति एम.ए.

सोमेश 'पाठक'

धन्य है वह बहावलपुर की धरती, जिसे पण्डित चमूपति जी की जन्मभूमि कहलाने का सौभाग्य प्राप्त है। धन्य हैं श्री वसन्दाराम जी और श्रीमती लक्ष्मी देवी जी जिन्हें पण्डित जी जैसा पुत्र प्राप्त हुआ। धन्य है १५ फरवरी १८९३ का वह दिन जब इस विलक्षण प्रतिभा ने पहली मर्तबा अपनी आँखें खोलीं और प्रकृति को अवसर दिया कि वह इतरा सके कि एक और दयानन्द का सिपाही दुनिया में कदम रख चुका है।

हजारों साल नरगिस अपनी बेनूरी पे रोती है,
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा।

कोई अभागा ही होगा जो पं. चमूपति जी के नाम से अपरिचित हो वरना आर्य जगत् में ऐसा कौन विचारशील मनुष्य है जिसने पण्डित जी को एक बार पढ़ा हो और उनका दीवाना न बना हो। पर यह दीगर की बात है कि अभागों की कमी नहीं। वास्तव में लेखन कहते किसे हैं-ये हमने पं. चमूपति जी से जाना। पं. गुरुदत्त विद्यार्थी के बाद यदि आर्य जगत् में कोई ऐसा लेखक हुआ जिसने पं. गुरुदत्त की कोटि का लेखन किया हो तो वे पं. चमूपति जी ही थे। इसलिये स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज उन्हें द्वितीय गुरुदत्त के नाम से पुकारते थे। पण्डित जी सात भाषाओं के आधिकारिक विद्वान् थे और न सिर्फ विद्वान् थे बल्कि इन सभी भाषाओं में लेखन, भाषण तथा उच्चतम काव्य रचने की अद्वितीय प्रतिभा उनमें विद्यमान थी। पण्डित जी की उत्कृष्टता को जानने के लिये इतना प्रमाण पर्याप्त है कि उनकी किसी भी पुस्तक के किसी भी पृष्ठ का कोई भी पैरा एक बार पढ़ लिया जाय, अन्दाजा लग जायेगा। वे उच्च कोटि के दार्शनिक थे। दर्शन की भाषा में बात करना व दर्शन की भाषा में लेखन करना उनकी शैली थी। ऐसी शैली कि जिस पर मुग्ध हुआ जा सके और इस दर्शनिक शैली में कविता, अहोभाग्य! उस कागज़ का कि जिस पर पण्डित जी की कलम ने थोड़ी स्याही छोड़ दी हो, तो फिर उस कागज का अमर होना तो तय है। पण्डित जी के कवित्व का वर्णन तो असम्भव सा है। हाँ, इतना कहा जा सकता है कि उनका पद्य तो पद्य था ही पर गद्य भी उच्चतम पद्य ही था। तुकबन्दी तो कोई भी कर लेता है पर कविता करने के लिये निर्मल हृदय की आवश्यकता होती है। एक ऐसा हृदय जो निश्छल है, निष्कपट है, बेदाग है, चालाकी जिसमें लेश-मात्र भी नहीं, जो राग-द्वेष से परे है। कुछ ऐसा ही हृदय पं. चमूपति जी ने भी पाया था। कैसा हृदय कि गद्य भी पद्य-रूप में फूटे।

पण्डित जी के बचपन का नाम चम्पतराय था। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी की प्रेरणा से वे 'चमूपति' लिखने लगे। वे 'चातक' तथा 'सादिक' उपनामों से कविता किया करते थे। उर्दू की कवितायें 'सादिक' नाम से तथा हिन्दी की 'चातक' नाम से किया करते थे। पर आज समाज उस दौर में है जहाँ कवियों की कल्पनायें थोथी समझी जाती हैं। वह भूल चुका है कि परमेश्वर का एक नाम 'कवि' भी है। पण्डित जी का मानना है कि बिना कविता के तो हमारा जीवित रहना भी सम्भव नहीं। इस बात का रस जरा पण्डित जी के शब्दों में लें-

"लोग पद्य से उतरते हैं, परन्तु कोरे गद्य से काम नहीं चलता। आज का संसार गद्यमय है। कवियों की कल्पना को सोतों का स्वप्न कहकर शुष्क-विज्ञान में जागृति ढूँढने चले हैं, परन्तु जो सच पूछो तो है बात-बात में पद्य। उपमा और रूपक के बिना एक वाक्य नहीं कहते। भला संसार को संसार ही क्यों कहो? इसमें सृति है। गति है। यह कविता नहीं तो क्या है? और सब गुण भुलाकर सृति मात्र से संसार का कहना कहाँ का सूधा विचार है। लो और उदाहरण लो-काम चलता है। भला काम भी चला करते हैं? जड़ में गति कैसी? बात-बात में कविता भरी है।"

पण्डित जी ने आर्य जगत् को अनूठी साहित्य-सम्पदा दी। ऐसी सम्पदा जो कि आर्य जगत् के लिये धरोहर है। पण्डित जी जिस क्षेत्र में पैदा हुये थे अर्थात् खैरपुर रामेवाला जो कि बहावलपुर रियासत का एक छोटा-सा कस्बा था और अब पाकिस्तान में है। वह अत्यन्त पिछड़ा हुआ तथा मुस्लिम बहुल क्षेत्र था। इस कारण उनकी प्रारम्भिक शिक्षा उर्दू, फारसी आदि भाषाओं के माध्यम से हुयी और हिन्दी, संस्कृत आदि से अनभिज्ञ रहे। प्रारम्भ में उन्हें देवनागरी लिपि तक का ज्ञान नहीं था। उनके ही एक सहपाठी रहे डॉ. राधाकिशन जी ने अपने संस्मरणों में एक बार कहा था-

"मेरा पण्डित जी से सर्वप्रथम परिचय १९११ ई. में हुआ था। तब वे एफ.ए. कक्षा में पढ़ते थे। वे फारसी में तो खूब शेर कहते थे, परन्तु हिन्दी नहीं जानते थे। १९११ ई. में आपने एफ. ए. पास कर लिया और दो वर्ष तक अहमदपुर शरकिया में

अध्यापक के रूप में कार्य किया। कविता में तब उन्हें विशेष रुचि थी। १९१३ ई. में बी.ए. उत्तीर्ण कर लिया फिर स्कूल में थर्ड मास्टर बने।

उन दिनों आप uptodate gentleman थे। हाई-स्कूल में अंग्रेजी के अतिरिक्त किसी भी भाषा में बात नहीं करते थे। हिन्दी संस्कृत कतई नहीं जानते थे।''

ऐसा व्यक्ति आगे चलकर संस्कृत तथा हिन्दी का प्रकाण्ड पण्डित बनेगा ये अनुमान लगा पाना भी उस समय असम्भव रहा होगा। उन्होंने स्वयं ही हिन्दी पढ़नी आरम्भ की तथा २-३ वर्ष के अन्दर ही संस्कृत में एम.ए. उत्तीर्ण कर लिया। आश्चर्य है कि बी.ए. के बाद देवनागरी लिपि सीखने वाला संस्कृत में एम.ए. कैसे कर सकता है? पण्डित जी वैदिक सिद्धान्तों के मर्मज्ञ थे। न केवल वैदिक सिद्धान्तों के ही अपितु कुरान व बाइबिल पर भी वे असाधारण पकड़ रखते थे। कुरान पर उनका ऐसा अधिकार देखकर मुस्लिम-वर्ग भी उन पर मुग्ध हुआ करता था व मुस्लिम विद्वान् भी उनकी प्रशंसा किया करते थे। ये अलग बात है कि उस धरोहर की सुरक्षा में थोड़ी कृतघ्नता बरती जा रही है। अनेक बहुमूल्य रत्न हैं उनके यथा **जवाहिरे जावेद, वैदिक स्वर्ग, मज़हब का मकसद, यास्क युग, सोम सरोवर, जीवन ज्योति, संध्या रहस्य, भारत भक्ति, दयानन्द आनन्द सागर** और **चौदहवीं का चाँद**, इसका तो कहना ही क्या? यह पुस्तक मौलाना सनाउल्लाह के '**हक प्रकाश**' का उत्तर है। कलम की नोंक भी सनाउल्लाह की तारीफ करना चाहती है-

सनाउल्लाह तेरी तो घृष्टता के भी सदके,
कि चमकाया चातक से चौदहवीं का चांद।

एक और अद्भुत पुस्तक पण्डित जी ने लिखी, '**रंगीला रसूल**'। ये वो पुस्तक थी जिसके कारण महाशय राजपाल जी की हत्या हुई थी। इस पुस्तक में मुहम्मद साहब की सच्चाई बयां की गयी है। यह सच्चाई मुसलमानों से पची नहीं और प्रकाशक की हत्या कर बैठे।

पण्डित जी आर्यसमाज के प्रति समर्पित व्यक्ति थे। उनका समर्पण निःस्वार्थ था। उनकी अधिकतर पुस्तकें विरोधियों के उत्तरस्वरूप लिखी गयीं। अगर वे चाहते तो उन पुस्तकों को अपनी कमाई का जरिया बना सकते थे। पर उन्होंने ऐसा नहीं किया। वे पुस्तकें लिखकर पंजाब प्रतिनिधि सभा को सौंप दिया करते थे। ऐसे त्याग की मूर्तियाँ दुनिया में कभी-कभी ही अवतरित हुआ करती हैं। आदरणीय 'जिज्ञासु' जी के शब्दों में कहें तो ''पं. चमूपति जी ऐसे महामानव थे जिन्होंने स्वेच्छा से धन को धूल समझकर अपने देश-जाति की सेवा, धर्म-प्रचार व धर्म-रक्षा के लिये फकीरी ग्रहण की थी।'' उनका हृदय इतना निर्मल था कि हँसी-मजाक में भी वे कभी झूँठ नहीं बोलते थे। ऐसा उनकी धर्मपत्नी ने एक बार बताया था। वे गृहस्थ में रहते हुये भी तपस्वियों जैसा जीवन जीते थे। वे इतने योग्य थे कि चाहते तो सब सुख-सुविधायें उनके कदम चूमतीं। पर ऐसी चाहना मनीषियों में कहाँ होती है? पं. श्री ज्ञानचन्द्र जी ने एक बार बताया था कि आप गर्मी में लिखते-पढ़ते रहते थे, परन्तु पंखा नहीं चलाते थे। इस पर जिज्ञासु जी लिखते हैं ''कि यह कोई थोपा हुआ तप नहीं था Self Imposed Poverty स्वेच्छापूर्वक वरण की गयी तपश्चर्या थी।'' ऐसी सादगी तो कहीं ढूँढे न मिलेगी।

दयानन्द और आर्यसमाज के प्रति पण्डित जी की निष्ठा अद्वितीय थी। सन् १९१९ में आपकी पुस्तक 'दयानन्द आनन्द सागर' छपी। इसमें ऋषि के लिये 'रहबरे मखलूकात' (नवरत्न) विशेषण प्रयुक्त हुआ है। इस पर मुल्ले भड़क उठे और पण्डित जी के खिलाफ फतवे जारी हो गये। अन्ततोगत्वा पण्डित जी को अपनी जन्मभूमि छोड़नी पड़ी। इस घटना के बारे में आपने T.L. Vaswani को एक पत्र में लिखा था-

"That Sind brought me up and then disowned me....in that whole affair my consuming love of Dayananda the writing of an Urdu biography of the Rishi in verse was my sole crime."

अर्थात् जिस सिन्धु ने मुझे पाला, उसी ने त्याग दिया और वो इसलिये कि मैं दयानन्द से प्रेम करता हूँ। क्या यही मेरा अपराध है कि मैं ऋषि के पवित्र जीवन को अपनी पँक्तियों में कह बैठा।

फिर आगे लिखते हैं-

"My love of home I seem to have sacrified."

लगता है कि मैंने अपने मातृभूमि के प्रति प्रेम को ऋषि पर वार दिया।

पण्डित जी की निष्ठा की मिसाल देनी होगी। पण्डित जी की पँक्तियाँ जो उन्होंने ऋषि दयानन्द के लिये कहीं थीं, मैं उन्हीं के लिये दोहरा देता हूँ-

इस हिम्मतो जुर्रत के सदके,[१]
इस जज्बाए 'सादिक'[२]**पे कुरबाँ।**
हक़[३] **की ख़ातिर, इससे बढ़कर,**
बातिल[४] **से बगावत क्या होगी?**

टिप्पणी-१. बलिहारी। २. सत्य-भावना। ३. सत्य। ४. झूँठ, पाखण्ड।

पण्डित जी के लेख व कवितायें उस समय की पत्र-पत्रिकाओं में छपते थे। उस समय के बड़े-बड़े कवि और लेखक आपकी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा किया करते थे। डॉ. इकबाल तो आपमें अपने गुरु की छवि देखा करते थे। पण्डित जी गुरुकुल मुलतान के मुख्याधिष्ठाता रहे थे। आचार्य रामदेव जी उनके गुणों पर मुग्ध होकर उन्हें लाहौर ले आये थे तथा 'दयानन्द सेवा सदन' की आजीवन सदस्यता के लिये तैयार कर लिया था। लाहौर में रहकर आपने अनेक वर्षों तक 'आर्य' का सम्पादन किया। सन् १९२७ में पण्डित जी को गुरुकुल कांगड़ी में आर्य सिद्धान्त और आंग्ल भाषा के प्रोफेसर के रूप में नियुक्त किया गया। वहाँ रहकर आपने 'वैदिक मैग्ज़ीन' के सम्पादन में आचार्य रामदेव जी की सहायता की। रामदेव जी के जेल जाने पर गुरुकुल के संचालन का कार्य आपके सुपुर्द किया गया और मुख्याधिष्ठाता के रूप में आपने गुरुकुल को उच्चतम शिखर पर पहुँचाया। सन् १९३५ ई. के अप्रैल मास में किन्हीं अनिवार्य कारणों से आपने गुरुकुल से त्याग-पत्र दे दिया। इसके बाद पण्डित जी लाहौर चले गये और वहाँ जाकर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का इतिहास लिखा जो कि अत्यन्त श्रम-साध्य कार्य था। इन दिनों पण्डित जी का स्वास्थ्य कुछ ठीक न रहता था।

और फिर वो घड़ी भी नजदीक आने वाली थी कि जिसका किसी को अन्दाज़ा न था। स्वास्थ्य पहले से ठीक नहीं था और गुर्दे के दर्द की शिकायत भी पुरानी थी। इस कारण शल्य-चिकित्सा करवानी पड़ी जिससे कमजोरी और बढ़ गयी। इसी बीच टाइफाइड ने भी आ घेरा। अनेक यत्न किये गये किन्तु रोग अन्ततः घातक सिद्ध हुआ। आर्यसमाज ही जिसके दिन की चिन्ता और रात का स्वप्न था, दयानन्द जिसकी साँस-साँस में बहते थे। ऐसा व्यक्ति आज साँसों से विदाई लेने जा रहा था। जिस प्रकृति को ४४ साल पहले उसने अवसर दिया था आज वही प्रकृति उसे अवसर देने को तैयार न थी। १५ जून सन् १९३७ ई. को पूज्यपाद पं. चमूपति एम.ए. पार्थिव देह को त्याग कर चिरनिद्रा में लीन हो गये। वस्तुतः यह मृत्यु नहीं थी बल्कि अमरता की सूचना थी। पण्डित जी को जो करना था वह करके जा चुके थे। अब तो कुछ कागजों पर उनकी छोड़ी हुयी स्याही बची थी, जो कि अमर है और अमर रहेगी। महाकवि 'सरूर' की कुछ पँक्तियाँ याद आ रही हैं-

''लोग उसको ही जीना समझते रहे,
साँस आती रही नब्ज चलती रही।
मरके सरशार हम जिन्दगी पा गये,
मौत हसरत से हाथों को मलती रही।।''

पृष्ठ संख्या ६ का शेष भाग... (सम्पादकीय)

आचार्य विरजानन्द दैवकरणि जी ने आर्य समाज की ओर से इतिहास-लेखन में अपना अमूल्य योगदान दिया है।

दुर्भाग्य से आर्य समाज में शोधपरक भारतीय इतिहास-लेखन की गंगोत्री अब शुष्क होती जा रही है। जहां वामपंथी और पाश्चात्य-मतानुयायी इतिहासकार नए-नए अस्त्र-शस्त्रों से सज्जित होकर भारतीय पुरा-इतिहास एवं वैदिक मान्यताओं को ध्वस्त करने का प्रयास करते हैं वहीं आर्य समाज इस क्षेत्र में उदासीन-सा है। होना तो यह चाहिए था कि जिस प्रकार आर्य समाज ने अनेक वैदिक मान्यताओं, पद्धतियों एवं आर्षविचार-सरणियों का लगनपूर्वक अनुसन्धान करके उद्धार किया, उसी प्रकार इतिहास-लेखन में भी पं. भगवद्दत्त की परम्परा पर चलकर अपना योगदान देते, परन्तु दुर्भाग्य से ऐसा हो नहीं रहा है। कीर्तिशेष आचार्य धर्मवीर जी ने पिछले वर्ष अपने संपादकीयों में अवश्य ही 'शॉन पोलक' के मतों की समीक्षा करते हुए अपने सिद्धान्त पक्ष को परिपुष्ट किया था, परन्तु अब इस संबन्ध में नीतिपूर्वक लेखन का प्रयास दृष्टिगोचर नहीं होता है। हमें सदैव स्मरण रखना चाहिए कि आर्यों के सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य का सिद्धान्त, सृष्टिसंवत् की वैज्ञानिकता एवं इतिहास, आर्यों के विदेश-गमन का सिद्धान्त इत्यादि विषयों पर विशद एवं प्रामाणिक लेखन की अभी भी महती आवश्यकता है। इस संबन्ध में सुधी विद्वानों से अपेक्षा है कि वे एतद्विषयक् क्षेत्रों में शोध कार्य करने हेतु आगे आएं ताकि भारतीय संस्कृति के ऐसे पक्ष, जिन्हें खण्ड-खण्ड करके आज की युवा पीढ़ी को अवगत कराया जाता है कि जो कुछ प्राचीन है वो सब असत्य है, दूषित है और अमानवीय है, उसका निराकरण हो सके। हमें यह प्रस्तुत करना है कि मानव निर्माण के दृष्टिकोण से प्राचीन भारत में कौन-कौन से उपक्रम किए गए थे और चिन्तन को नयी दिशा दी गई थी जिनके कारण भारत में एक गौरवशाली स्वतन्त्र चिन्तन-परम्परा का विकास हो सका। जिससे आज की पीढ़ी इससे अनजान या भ्रान्त है।

- दिनेश शर्मा

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. प्राचीन भारत के इतिहासकार, पृ. 268, भगवान सिंह, 2011

2. भारत में ईसाई धर्म-प्रचार तन्त्र, पृ. 143-147,

3. वही, पृ0 64-65, अरूण शौरी, 2014

पं. चमूपति जी के निधन पर आर्य समाज के लोकप्रिय पत्र आर्य मुसाफिर के सम्पादक श्रीमान् **महाशय चिरञ्जीलाल 'प्रेम'** जी द्वारा लिखी गई यह ऐतिहासिक कविता ८० वर्ष पश्चात् वर्तमान के लोकप्रिय पत्र 'परोपकारी' में प्रकाशित की जा रही है। महाशय चिरञ्जीलाल जी 'प्रेम' उस युग के आर्यसमाज के एक जाने-माने शास्त्रार्थ महारथी और सुवक्ता थे। आप पं. चमूपति जी के व्यक्तित्व को बहुत निकट से जानते थे सो इस कविता में उनके गुण, कर्म व स्वभाव, उनकी सेवाओं, तप, त्याग, वेद-निष्ठा, ईश्वर-भक्ति, सदाचरण का जैसा चित्रण किया गया है, वैसा हर कोई नहीं कर सकता। एक-एक पंक्ति अपने आपमें बेजोड़ है।

पं. चमूपति जी के निधन पर प्रकाशित कविताओं में प्रेम जी की यह रचना सर्वश्रेष्ठ मानी गई थी। इसका एक-एक शब्द भक्त-हृदय आर्यों की कोमल भावनाओं को छू लेता है।

राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

पं. चमूपति जी के निधन पर

हज़ार हैफ़[१] कि दुनिया से उठ गया वोह वीर।
हज़ार जान से जिस पर फ़िदा थे बरना ओ पीर[२]।।
दर्खशाँ[३] चाँद था वोह आसमाने हिकमत[४] का।
हर एक बात में उसकी निहाँ[५] थी सौ तदबीर।।
हज़ार मुश्कलें हों फिर भी मुसकराता था।
मजाल क्या कि हो सीने से पार ग़म का तीर।।
कलम का था वोह धनी और था फ़सीह तकार[६]।
और आसमाने अदब[७] का तो था वोह बदरे मुनीर[८]।।
मुदाम[९] खाता था ग़म उसको ख़ाना जंगी[१०] का।
दुआ थी उसकी कि सब आर्य हों शक्करो शीर[११]।।
हों सारे आर्य यक जान और दो कालिब।
थी वक्ते मरग[१२] यही ख़ाहिश उसकी दामनगीर[१३]।।
वोह ऊँच नीच के भावों से था बहुत ऊँचा।
निगाह में उसके थे यकसा[१४] सभी सग़ीरो कबीर[१५]।।
ऋषि का भक्त था और वेद का वोह आशिक था।
गया वोह छोड़ के सद हैफ़[१६] हमको यूँ दिलगीर[१७]।।
जगह दे उसको वोह अपने जवारे रहमत[१८] में।
और उसके बच्चों का हो दस्तगीर वही कदीर[१९]।।

सन्दर्भ सूची

१. महाशोक २. जवान और वृद्ध ३. प्रकाशमान, चमकता ४. ज्ञान-गंगा-गगन ५. छुपी थी ६. धारा प्रवाह बोलने वाला वक्ता ७. साहित्य के आकाश का ८. चमकता चन्द्रमा ९. सदा १०. गृह कलह ११. दूध में मीठे जैसे अर्थात् संगठित **१२. मृत्यु के समय १३. यही चाह मन में थी १४. एक जैसे १५. बड़े-छोटे १६. महाशोक १७. मीत १८. प्रभु की कृपा उस पर हो १९. वही महान् परमात्मा उसकी सन्तान का रक्षक हो।**

आर्यजगत् के समाचार

१. **वेद प्रचार**- परोपकारिणी सभा केसरगंज, अजमेर की प्रेरणा से नागौर जिला आर्य उप-प्रतिनिधि सभा ने वेद प्रचार, सत्संग व हवन का कार्यक्रम करवाया, सैकड़ों लोगों ने भाग लिया। इसमें स्वामी सोमानन्द जी ऋषि उद्यान, अजमेर व भजनोपदेशक श्री हरीशमुनि-महेन्द्रगढ़ व सहयोगी, जगमाल आर्य-रेवाड़ी, श्री किशलाल आर्य-राजगढ़ ने भाग लिया।

२. **रामनवमी पर्व मनाया**- वेद-प्रचार की शृंखला में आर्यसमाज रमेश नगर, करनाल के प्रांगण में रामनवमी पर्व आर्य केन्द्रीय सभा करनाल के तत्त्वावधान में हर्षोल्लास से मनाया गया। जिसमें पं. वीरेन्द्र शास्त्री (सहारनपुर) व पं. दिनेशदत्त (दिल्ली) का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

३. **स्वर्ण पदक प्राप्त**- गुरुकुल आश्रम आमसेना, जिला नुआपड़ा (ओडिशा) के निम्न होनहार मेधावी छात्रों ने महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से स्वर्ण पदक प्राप्त करके गुरुकुल का गौरव बढ़ाया है। आचार्य मनुदेव, (व्याकरणाचार्य, दर्शनाचार्य), ब्र. निरंजन आर्य (व्याकरणाचार्य), ब्र. राकेश आर्य (व्याकरणाचार्य), गीता जी (साहित्याचार्य) आदि को हरियाणा के महामहिम राज्यपाल ने अपने करकमलों से स्वर्ण-पदक प्रदान करके सम्मानित किया है।

४. **आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री सम्मानित**- आर्य प्रादेशिक सभा एवं डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति ने महात्मा हंसराज जयन्ती के अवसर पर जयपुर (राज.) में आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी को वैदिक विद्वान् के रूप में सम्मानित किया। सम्मान में ३१ हजार रुपये की राशि प्रदान की गई।

५. **नवसंवत्सर मनाया**- आर्यसमाज डबरा ने नवसंवत्सर दिनांक २९ मार्च से ०५ अप्रैल २०१७ तक आठ दिवसों में सत्रह परिवारों में यज्ञ एवं सत्संग संपन्न कराया। कार्यक्रम में पुरोहित यतीन्द्र एवं प्रधान श्री ब्रह्मस्वरूप शर्मा के भजन हुए, मदनसिंह परमार, डालचन्द माहौर, हरचरन लाल वर्मा, छदामीलाल, मुकेश श्रीवास्तव एवं महेन्द्रसिंह चंदेल के प्रयास प्रशंसनीय रहे।

६. **पुरोहित प्रशिक्षण शिविर**- पं. ओमप्रकाश विद्यावाचस्पति की स्मृति में तृतीय आर्य पुरोहित प्रशिक्षण शिविर 'बंगीय वेद प्रचार सभा' द्वारा दिनांक २८ मई से ४ जून २०१७ तक आर्यसमाज कलकत्ता १९-विधान सरणी, कोलकाता-७००००६ में आयोजित किया गया।

७. **आवश्यकता-व्याकरणाचार्य की**- वैदिक गुरुकुल आर्यसमाज रुद्रपुर ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड) को एक सुयोग्य विद्वान् (प्राचीन व्याकरणाचार्य) की आवश्यकता है-जो प्राचीन व्याकरण के साथ दर्शन, वेद, साहित्य-आदि विषयों को मध्यमा, शास्त्री कक्षाओं को सुगमता से पढ़ा सके। महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों में अविचल आस्था व दृढ़ विश्वास हो।

सम्पर्क- ०९४१०३३४६५९

८. वैदिक वीरांगना दल, बी-१२३, मालवीय नगर, जयपुर के द्वारा बेटी बचाओ आन्दोलन के तहत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत यज्ञ, वैदिक मन्त्रों व गायत्री पाठ के साथ की गई। कार्यक्रम में महिलाओं व युवतियों ने आन्दोलन में सहयोग देने का वचन दिया। कार्यक्रम में बेटी बचाओ के सन्दर्भ में एक लघु प्रदर्शनी भी लगाई गई, जिसमें बेटियों के महत्त्व पर प्रकाश डाला गया। सबसे अच्छा विचार व्यक्त करने वाली महिला को पुरस्कृत किया गया।

९. **वैवाहिक परिचय सम्मेलन**- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित १८वाँ आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन, दि. ९ जुलाई २०१७, कार्यक्रम स्थल- आर्यसमाज, बाहरी रिंग रोड विकासपुरी, नई दिल्ली। आप अपने आर्यसमाज के परिक्षेत्र में आर्य परिवार के विवाह योग्य युवक-युवतियों से पंजीकरण फार्म भरकर सम्मेलन की तिथि से १५ दिन पूर्व कार्यालय दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ में शीघ्रातिशीघ्र भिजवाने का श्रम करें। **सम्पर्क सूत्र** - ०९८१००६१७६३, ०९९५८१७४४४१

१०. **वधु चाहिये**- आर्य परिवार, संस्कारित, जन्म- १९८९, कद-५ फूट ८ इंच, शिक्षा- एम.बी.ए., मैन्यूफैक्चरिंग एण्ड ट्रेडिंग में सेवारत, युवक हेतु आर्यसमाजी परिवार की संस्कारित युवती चाहिए। **सम्पर्क**- ९४५६८०४६६६

ई-मेल-omhom011@gmail.com

११. **शोक-समाचार**- **श्रीमती चम्पादेवी तोषनीवाल** धर्मपत्नी श्री सुन्दरलाल तोषनीवाल ब्यावर निवासी का १८ मई २०१७ को निधन हो गया। चम्पादेवी जी का अनेक गुरुकुलों से जुड़ाव रहा व निरन्तर सहयोग भी प्राप्त होता रहा। उनका अन्तिम संस्कार १९ मई को वैदिक रीति से किया गया।

१२. **शोक समाचार**- आर्यसमाज शृंगार नगर, लखनऊ के सदस्य श्री सुधाकर देव के पिता तथा हैदराबादी सत्याग्रही पं. जयदेव शास्त्री के सुपुत्र **श्री विजय देव राजपूत** (७४ वर्ष) का दिनांक ८ अप्रैल,२०१७ को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार ग्राम-हीरावाली, तहसील-नगीना, जनपद-बिजनौर (उ.प्र.) में वैदिक विधिपूर्वक किया गया।

रस्सा एवं मल्लखम्भ पर आसन करते आर्यवीर

आर्यवीर दल शिविर की झलकियाँ

आसन-स्तूप

किशनगढ़-अजमेर में बन रहे एयरपोर्ट का नाम महर्षि दयानन्द सरस्वती के नाम पर हो इसके लिए हिमाचल के राज्यपाल आचार्य देवव्रत आर्य से चर्चा करते हुए परोपकारिणी सभा के मन्त्री श्री ओममुनि 'वानप्रस्थी'

स्वामी श्रद्धानन्द संन्यास दीक्षा शताब्दी समारोह के अवसर पर ब्यावर में उपस्थित लोकायुक्त श्री सज्जनसिंह कोठारी एवं सभा मन्त्री श्री ओममुनि 'वानप्रस्थी'

प्रेषक:
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज,
अजमेर (राजस्थान) ३०५००१